शर्म आती है मगर

शर्म आती है मगर

[हास्य-व्यंग्य की झलकियां, प्रहसनों, लेखों का अनुपम संग्रह]

इकराम राजस्थानी

संघी प्रकाशन
जयपुर □ उदयपुर

प्रकाशक विजेन्द्र कुमार सघी
सघी प्रकाशन
53, बापू बाजार,
उदयपुर 313001

मूल्य पच्चीस रुपये

सघी प्रकाशन उदयपुर द्वारा प्रकाशित / प्रथम सस्करण 1988
 / मुद्रक शाति मुद्रणालय, दिल्ली 110032

आत्महत्या करने वालों के लिए

बहुत दिनों से सोच रहा था, आत्महत्या करने को नही, इस पर कुछ लिखने की। रोज-रोज अखबारों मे पढकर रेडियो से सुनकर तंग आया हू। हा इस मामले मे टेलीविजन अछूता है शायद वह दिन भी आए जब टेलीविजन पर किसी को आत्म-हत्या करते दिखाया जाए या फिर उसके अचूक नुस्खो पर कोई विशेष कार्यक्रम आरभ किया जाए। वैसे आजकल यह बडा प्रचलित होता जा रहा है। फैशन मे शामिल होता जा रहा है। वो प्रेमी-प्रेमिका कहलाने का हकदार ही नही जो आत्महत्या जैसा रोमानी काम न कर सके या फिर ऐसा करने का करिश्मा न दिखा सके। वो दिन अब लद गए जब लडकिया और लडके अपने हॉबीज मे तैरना या हवाई जहाज चलाना बताते थे। अब तो पानी मे डूबना या रेल से कट जाना हॉबी मे शामिल है। आत्महत्या के अन्दाज को, अदा को कुछ लोग "रस्माकशी" बस इन्ही आधारों पर खुदकशी जसी शानदार परम्परा टिकी हुई है। बहुत से लोग तो आजकल शौकिया कर रहे है "कि चलो यार, कुछ नही कर पा रहे तो कम-से-कम आत्महत्या तो कर ही डालो, और भी नही तो कल के अखबार मे नाम तो आ जायेगा।" कुछ महानुभावो के यहा पीढी दर पीढी यह चला आ रहा है। यानी

वशानुगढ रोग, मतलब कभी वो आत्महत्या करते हैं और उनकी वजह से दूसरे लोग आत्महत्या कर लेते,हैं।

वैसे हम भी यही महसूस कर रहे हैं कि इस जमाने मे इससे सस्ता और सुन्दर और कोई शौक हो नही सकता। आदमी का जब जी चाहा अपने गये और आराम से आत्महत्या कर ली। खुद तो चले गये और फिर भुगतें पीछे वाले उनकी बला से।

एक समय तो ऐसा भी आएगा कि लोग अपनी बेटी का रिश्ता तय करते समय दूल्हा के पिता से इस तरह के सवाल किया करेंगे। "माफ कीजिये, क्या आपके परिवार मे कभी किसी ने भी आत्महत्या नही की है?"

"देखिये साहब, हम तो अपनी लडकी उसको देंगे जिस लडके के परिवार मे आत्महत्या की परम्परा रही हो! कमाल है! बडा गया बीता घर है आपका, क्या आपके यहा खुदकशी की परम्परा नही है?"

ऐसे परिवार को बहुत हीन दृष्टि से देखा जाएगा, जहा पर कभी किसी ने आत्महत्या न की हो। ये सारे परिवार पिछडे हुए माने जायेंगे।

आजकल तो लोग सुबह जब घर से निकलते हैं उस समय सोचकर निकलते हैं कि आज चाहे कुछ भी हो आत्महत्या करके ही रहूगा। और अगर बाई चास शाम को सही सलामत लोट आए हैं तो यू मुह लटका हुआ मानो कोई हिमालय पर चढने का मौका छूट गया। आते ही पत्नी से कहेंगे, "क्या बताऊ यार, कई बार ट्राई की, मगर लगता है अपने भाग्य मे आत्महत्या करने का सुख नही है।"

कई बार तो पत्नी भी कहती है, "सुनो जी, मेरी तीन-तीन सहेलियो के पति खुदकशी कर चुके हैं और एक तुम हो! मुझे तो उनके सामने जाते बडी शर्म आती है। क्या कहेंगी वे मुझे?

अच्छे कायर पति के पल्ले पडी।" बिचारे पति मन मसोस कर रह जाते हैं। उन्हे अपनी पत्नी के अन्दर इस हीन भाव के उजागर होने की बडी फिक्र है।

इस परम्परा को तरह तरह से डवलप कर रहे हैं। इस शौक को बढावा देने के लिए कई समाजसेवी सस्थाये अपना अमूल्य सहयोग दे रही हैं। बुद्धिजीवी इसके सहज तरीको पर प्रकाश डाल देते हैं। हमारे मित्र ने तो आत्महत्या-प्रेमियो के लिए जो निकट भविष्य मे ही नया कीर्तिमान स्थापित करना चाहते हैं, आत्महत्या कोचिंग कालेज खोल लिया है। जो लोग इस असीम सुख से वचित रह गए हैं, ट्रेन के लेट होने की वजह से कट नही पाए, पत्नी के सामने स्वय को पत्नीव्रत पति या प्रेमिका के सामने अमर प्रेमी साबित नही कर पाये, उन्हे ऐसे कमाल के अचूक नुस्खे बताये जायेंगे, एक से एक मनपसन्द फार्मूला जिन्हे पढते ही आप घर नही सीधे आत्महत्या करने को जाएगे। एक बार अवश्य आजमाइए। मैं तो अब लेख समाप्त कर आज्ञा चाहता हू। आत्महत्या से बचे लोगो से फिर मुलाकात होगी।

सफरनामा दिल्ली का

अगर हम दिल्ली को हिंदुस्तान का दिल मानें तो फिर कलकत्ता को कलेजा, बम्बई को बडी आत, फरीदाबाद को फेंफडे, और फिर जयपुर, जालधर, भोपाल, अहमदाबाद वगैरह को पसलिया, हाथ परो की अगुलिया आदि तो मानना ही पडेगा। नही मानने का तो सवाल ही नही उठता और अगर कोई उठायेगा तो वह खुद अपनी भुगतेगा, हम इसके लिए कतई जिम्मेदार नही होंगे क्योकि हम तो एकता पर विश्वास रखते हैं। देखने मे और कभी-कभी इसमे झाकने से पता चलता है, कि यह दिल काफी बडा है। इसमे कई मजहब, कौमे, समाकर यू एक हो गयी है जसे कई विरोधी पार्टियो ने मिल कर एक दिल बना लिया। अगर किसी की बद्दुआ रग लाया होगी या साहित्यिक भाषा मे कहे कि किसी को पागल कुत्ते ने काटा होगा तो वह एक बार जरूर दिल्ली की तरफ मुह करेगा।

आप यहा आकर किसी से भी मिलिए सब अनजान हैं। कोई किसी को नही पहचानता। यहा तक कि कई बार तो पति पत्नी भी एक-दूसरे को 'हैलो' कहकर यू गुजर जाते हैं जसे वे एक दूसरे से किसी जनम मे कभी मिले ही नहो। सब भागे जा रहे हैं, एक-दूसरे के पीछे। इसे भेडचाल तो नही कहेंगे क्योकि ये लोग

कुओ की तरफ नही अपने घरो की तरफ ही जा रहे होगे। और इतना तो निश्चित है कि इनके घर कही न कही पर तो होगे ही और जिनके घर-बार नही हैं वो तो और भी ज्यादा भाग रहे है।

यहा आने के बाद जौक और गालिब जैसे शायरो की याद जेहन मे ज्यादा मडराती है। तडपन और भडकन होनी चाहिये वो यहा पग-पग पर है।

आप अगर किसी शरीफ लगने वाले आदमी से कही का पता पूछेंगे तो या तो उसे खुद ही मालूम नही होगा या फिर न जाने कौन-से जनम का बदला निकालने के लिए आपको अगुली के इशारे से उस तरफ भेज देगा जिधर शायद वो खुद जिन्दगी-भर नही गया होगा और आपको वो रास्ता तो कम से कम हरगिज नही मिलेगा जिसकी आपको तलाश है, और जिसके बारे में आपने उस तथाकथित शरीफ आदमी से रास्ता पूछने की गलती की है। उस पर पछतायेंगे। अब यहा आपके सामान्य ज्ञान का इम्तहान है कि आप किस तरह भूल-भुलैया से निकलते है और सही बस पकडकर अपने नियत स्थान पर पहुच कर स्वय को अभिमन्यु साबित कर दें। शायद दिल्ली के राहगीरो के लिए ये शेर लिखा गया हो—

दिखाई राहबरो ने सदा गलत राहे,
भटक-भटक के ही मजिल तलाश की हमने।

अरे साहब, वो जमाना और था जब जौक दिल्ली की इन गलियो को छोडकर जाने के लिए किसी कीमत भी तैयार न होते थे। और अगर उन्हे जबरदस्ती ले जाना भी चाहते थे तो बच्चो की तरह मचल पडते थे, लेकिन अब तो वो गलिया भी नही रही जहा जीने और मरने के सवाल दिन मे कई बार यू ही खडे हो जाया करते थे।

ये तो बहुत अच्छा है कि आज गालिब या जौक दिल्ली मे

नही हैं, अगर होते तो उन्हे किसी भी तरह बस नही मिल सकती थी। क्या वो भाग कर चढ सकते थे, मैं कहता हू हरगिज नही बिल्कुल नही। अरे साहब, बस पकडना तो दूर, उनको तो इतने नम्बर ही याद नही रह सकते थे। और फिर एक आफत थोडे ही है, कमबख्त एक जगह जा बस आकर रुकी है, वापसी मे दूसरी साइड से मिलती है। अब आप सोचिये जितना वक्त वो लोग बसो के नम्बर याद करने मे लगाते उतनी देर मे मुकम्मल गजल नही कह लेंगे।

अगर आपकी किस्मत अच्छी है और आपको मनचाही बस मिल गई है तो बस यही से अनचाहे झटको का दौर शुरू हो जाता है। ड्राइवर बीच-बीच मे अपनी मौजूदगी का अहसास दिलाने के लिए ऐसे दो चार झटके ब्रेक के साथ लगायेगा कि पीछे की सारी सवारिया एक साथ आगे आ जायेंगी जिसे डाइरेक्ट प्रमोशन भी कह सकते हैं बस को छलाग लगाकर आगे आ जाना। इन झटको मे सबसे ज्यादा फायदा तो कालेज के लडको का होता है, क्योकि ऐसी स्थिति मे कई बार वो अपनी महबूबा की बाहो मे पहुच जाते है और कई बार माशूक का सर उनकी गोद मे होता है। मेरा ख्याल है कि अगर ड्राइवर झटके न मारे तो शायद लडके इसके विरोध मे हडताल कर दें।

लेकिन साहब दिल्ली फिर भी दिल्ली है। इसकी क्या बात है। अगर आज जौक साहब ही वे यहा आ जाए तो यकीनन यहा का माहौल देखकर घबरा जाए, और अपना ये शेर बदल कर यू पढते चले जायें—

जल्दी चलिए जौक, ये दिल्ली की गलिया छोडकर

बरसात एक दफ्तर की

बरसात आ गई है आनी ही थी, न आती तो जाती कहा इसे दूसरी ठौर भी तो नही है, ले-देकर बस ये ही एक फालतू जगह थी। हर साल ही ये बैरन आ जाती है कभी फुरसत के मूड मे होती है तो साल मे दो बार भी चली आती है। वैसे न तो हमे इसकी जरूरत है और न ही इतजार। मगर जब आ ही गई है तो मेहमाननवाजी तो करनी ही है। परपरा है।

बादल छा रहे हैं गरज रहे है और बरस भी रहे हैं। मुहावरो की बात पर मत जाइए वो तो किसी सिरफिरे ने यू ही कह दिए। गुस्से मे कहा होगा कि गरजने वाले बरसते नही। एक बात बताऊ आपको इस विषय पर अच्छा खासा शोध निबन्ध तैयार हो सकता है मैं किसी दूसरे देश की सैर के लिए जा सकता था। लेकिन यज्ञ मे राक्षसी विघ्न की तरह किसी बडे आदमी का साला आयेगा तो आप कल हिंदुस्तानी सार्थीय रोमास को वहा के वायलीन पर बजाकर कुछ नए आयाम दे रहा है। और मैं यहां के एक दफ्तर मे झीक रहा हू। दिल के अरमान व्यवस्था की नाली मे बह गए हैं।

इस टाइटल पर एक अच्छी-खासी फिल्म भी बन सकती थी। बरसात के सीन तो वैसे भी हर फिल्म मे जबर्दस्ती ठूसे जाते हैं

ताकि दर्शक नायिका के मासल शरीर का भरपूर दर्शन करके अपने मन को प्रसन्न कर सकें। इसी को कहते हैं स्वस्थ मनोरजन इस फिल्म म भी आफिस टाइम के बाद बॉस के साथ स्टेनो का बरसात मे भीगते हुए एक गाना रखा गया था। मोटे थुल थुल साहब के साथ तन्वगी कामिनी का कमर को झटके दे देकर गीत गाना और फिर किसी अच्छे होटल मे रात गुजार देना।

एक अच्छी फिल्म की भूमिका हो सकती है। प्रोड्यूसर भी राजी हो गया था। शूटिंग करने के दिन नजदीक आ गये थे कि अचानक सारा पैसा लेकर हीरोइन अपने प्रेमी के साथ चम्पत हो गई।

और ऐसी गई कि आज तक अपने बच्चो तक के साथ कही दिखाई नही दी और इस तरह हिन्दी फिल्मो के इतिहास मे एक बहुत शानदार धमाका होते-होते रह गया। दर्शक बेचारे स्वस्थ मनोरजन से वचित रह गए। मुझे अपनी इस योजना को बीच मे ही रोक देना पडा अपनी अपनी मजबूरिया हैं। अब ये क्या कम मजबूरी है कि इतने धासू टॉपिक पर भी मैं सिर्फ ये लेख लिख पा रहा हू। आप मन-ही-मन मुझे गालिया अवश्य दे रहे होगे कि इतने रूमानी मौसम को मैं व्यग्य की दिशा मे मोडकर अन्याय कर रहा हू। मगर यकीन मानिए, जब कभी रूमानियत व्यग्य शैली मे बदलती है तो अलग ही जायका देती है। ठीक वैसे ही जैसे किसी ने सरे राह चलते-चलते प्रेम पथी का सत्कार चरण पादुकाओ से कर दिया हो। आजकल अभिनदन की परम्परा देश मे कुछ अधिक ही चल रही है। लोग अपने-अपने परिचितो का अभिनन्दन करने पर तुले हुए हैं। कई बार तो ऐसा भी हो जाता है कि आदमी का अभिनन्दन हो भी जाता है और उसे पता तक नही चलता जैसे बेहोशी की हालत मे ऑपरेशन करते हैं। डाक्टर लगता है ये दुर्दिन मुझे भी देखने पडेगे। मेरे नयाकथित साहि-

त्यिक मित्र मेरा भी अभिनन्दन करके ही छोडेगे चाहे किसी भी विधा मे हो। मैं भी इस रिमझिम माहौल मे कहा ये नीरस बातें ले बैठा था। बात तो बरसात की चल रही थी। आपने महसूस किया हो या नही मगर मुझे तो लगता है, बरसात भी अब की बार कितनी आफिशियल होकर आई है।

बिल्कुल दफ्तरी लग हो नही रहा कि बरसात जैसा कुछ हुआ है। मन मे तो आ रहा है कि इस फाइल को भी पुट अप करू बॉस के सामने, लेकिन फिर जाने क्या सोचकर बस ये छोटा सा बरसाती नोट ही लिखना काफी समझा।

हमारे दफ्तर मे तो हर समय सूरदास की गोपियो की तरह बारिश रत ही रहती है। फाइलो के ढेर पर से जब धूल झाडते हैं तो लगता है नभ मे रग-बिरगे बादल तैर रहे है।

बात-बात पर बॉस का किसी को डाटना-फटकारना गरज और धमाको का एहसास दिला देता है। बिजलियो की तो बस बात ही मत पूछिए, गिरती रही है और गिराती रही है। अभी चार दिन पहले ही एक कर्मचारी पर सस्पेन्ड की बिजली गिर पडी। बेचारा घर पर बैठा बीबी-बच्चो के साथ आसुओ की बरसात कर रहा है और बादलो से सुजान बॉस के घर अपने आसुओ को ले जाकर बरसाने की विनती कर रहा है। पूर्ण रूप से घनानन्द हो गया है। बेचारा कर्मचारी अभी एक महीने पहले ही एक टेम्परेरी कुआरे पर एक शादीशुदा परमानेन्ट बिजली गिर पडी वो बाग मे बैठा आज कल चल चमेली वाला गीत गा रहा है।

जिस समय स्टेनो अपनी खिजाबी जुल्फो को लहराते हुए आफिस मे प्रवेश करती है तो सावन की घटा-सी छा जाती है। बॉस के दिल पर तो हजारो बिजलिया एक साथ गिर पडती हैं। कुछ मनचले आवारा बादलो की तरह सास भरने लगते है। जब

साहव किसी पर कडकते हैं। तो मूसलाधार वारिश होने लगती है। कर्मचारी टेबिल पर और अधिक झुक जाते हैं। कुछ भाग जाते है। कुछ भीग जाते है। पसीने से ही सही फाइलें तैरने लगती हैं जैसे वच्चे नाव चला रहे हैं। साहव नार्मल हो जाते हैं, वादल छट जाते हैं, घटाए चली जाती हैं। कमरे मे से खिलखिलाहट की आवाज आने लगती है, मौसम और भी सुहाना हो जाता है। आफिस की नैया के खेवनहार बॉस भी कुछ हमदर्द हो जाते हैं खासतौर से अपने चमचो के लिए लोग पाच वजने का इन्तजार करते हैं। घर जाने के लिए लोगो को घर से कितना लगाव होता है। बरसात मे तो और भी ज्यादा अन्दर की वरसात कुछ कम हुई तो लगा वाहर शुरू हो गई है।

घर पत्नी कडक रही होगी। कुछ भी हो घर पर तो जाना ही है। अपने ही घर जरा वरसात थम जाए, गदे नाले को पार करके घर पहुचना होगा साइकिल सिर पर रखकर। बॉस का तो क्या है कोई फर्क नही पडता, उन्हे कौन सा अपने घर जाना है। अभी चले जाएगे कार मे वैठ कर स्टेनो को वीच मे कही छोडते हुए।

बड़ी गलती की शादी करके

गलती करना मनुष्य के स्वभाव का एक अग माना गया है। जिस दिन आदमी गलती करना छोड देगा शायद आदमी ही नही रहेगा। इन्सान है ही गलतियो का पुतला। दिन मे चिराग लेकर ढूढने पर भी ऐसा आदमी शायद ही मिले जिसने कोई गलती न की हो। गलतिया तो तभी से की जा रही हैं जब से दुनिया बनी है। हम तो कहते हैं ससार का निर्माण ही गलती के कारण हुआ। न तो बाबा आदम गेहू खाते और न ही उन्हे जमीन पर फेका जाता। कहने का मतलब है कि गलतियो का नतीजा तो ससार है। अब आप ही सोचिए, जब ऐसे-ऐसे लोग ही गलती कर सकते है तो हम साधारण व्यक्तियो की तो बिसात ही क्या है। यहा तक की स्वय भगवान ही गलतियो के शिकार हो गए वरना अधाकवी सूरदास ये थोडे ही लिख देता 'विधातही चूकपरी' और वाकई विधाता ने इतनी गलतिया की हैं कि उन्हे गिनाना भी मुश्किल है। मिसाल के तौर पर कोयल का इतना मधुर स्वर है लेकिन बेचारी का रग काला देकर उसकी सारी महिमा मिट्टी मे मिला दी। सुदर नयन हिरन को दे डाले जो मजनू की तरह दर-दर की खाक छानता फिरता है। ज्यादा दूर जाने की आवश्यकता नही है। हम अपने शरीर पर ही एक नजर

डाले तो गलतियो का अम्बार नजर आएगा। अब देखिए न हमारी दोनो आँखें आगे लगाकर कितना बडा कबाडा किया है। अगर इनमे से एक आध पीछे लगा देता तो उसका क्या बिगड जाता और कितनी भयकर दुघटनाओ की सभावनाए समाप्त हो जाती। कम-से-कम फिर पीछे से टक्कर लगने का डर ना नही रहता। फिर देखते कौन भोकते हैं किसी की पीठ मे छुरा। मगर अपनी सुनता कौन है। खैर, जब भगवान ही गलतिया करने से बाज नही आए तो हम तो हैं ही क्या ! जिसने भी गलती से इस ससार मे जन्म लिया है, बस हजारो गलतिया करने का मौका उसे मिल गया है।

आदमी कई तरह की गलतिया करता है। कुछ छोटी कुछ बडी। कुछ नौकरी करना गलती समझते है और कुछ नौकरी न करना।

कुछ लोग डिग्रिया हासिल करना महान गलती मानते हैं और कुछ लोग डिग्रिया न लेने की गलती पर रोते हुए भी देखे जा सकते है। एक सज्जन मुझसे कह रहे थे—"अगर मैं मद्रिक होता तो न जाने क्या से क्या हो जाता !" अब सोचिए—ये बात तो वा मुझसे कह रहे थे—जिसने एम० ए० किया है और अब तक सर्विस के लिए परेशान है।

यहा तक कि कुछ लोग तो मोटर-साइकिल, स्कूटर वगरह खरीदने की गलती पर आसू बहाते हैं। चलिए छोडिए ये सब बातें—गलतिया गिनवाई नही जाती हैं। गलतियो के गीत तो आदि काल से गाए जा रहे हैं।

हम भी मनुष्य हैं और इसी ससार मे विचरण कर रहे हैं। अब भला ये कैसे सभव है कि हम कोई गलती न करें। हमने भी गलती की और बहुत बडी की। कुछ गलतिया तो ऐसी भी हैं जो ठीक भी की जा सकती हैं। मगर हमने जो गलती की

उसका तो ठीक होने का प्रश्न ही नही उठता। हा, अलबत्ता हम जरूर ठीक होते जा रहे हैं। आप सोचेंगे ये कौन-सी गलती है जो इसी महगाई की तरह बढती जा रही है। बात ठीक भी है इसी गलती के कारण ससार मे सबसे अधिक साहित्य का द्वार खुला हुआ है। ससार का हर महान व्यक्ति इस गलती पर रोया है। ये बात अलग है कि अपनी झेप मिटाने के लिए उसने अपनी महानता का कारण इसे मान लिया है। अब तो आप मे से बहुतो के जख्म भी ढेर हो गए होगे और पता चल गया होगा कि ये गलती है शादी करना।

इसे हम गलती माने या माता-पिता का हमारे प्रति बदले की भावना व्यक्त होना—कुछ समझ मे नही आता—मा की ममता के चक्कर मे ये फासी का फदा हमने अपने गले मे डाल लिया है। हमारी इस खुदकशी पर हमारे मा बाप और मेरे दोस्तो तक ने खुशिया मनाईं।

हमारी यह आत्मा अदर से रोने लगी। हम सरे बाजार लूट लिए गए। ढोल बजाकर हमारे परो मे गुलामी की बेडिया डाल दी गई। घर मे बकौल माताजी के चाद-सी बहू आ गई। लेकिन कुछ ही दिनो बाद चाद की ठण्डी चादनी और मोहक उजाला दूर हो गया और बाकी रह गया काले चेहरे के दाग। कुछ ही दिनो मे वहू घर की परेशानी का सामान बन गई—माताजी पछताने लगी और पिताजी मेरी तरफ बस देखते रहने लगे।

दुल्हन की हाजिर-जवाबी से सारा घर तग आ गया—लगता है हम बीरबल की बेटी घर मे ले आए हैं। नतीजा यह निकला कि हम बहू को लेकर अलग रहने को मजबूर किए जाने लगे मा-बाप की तरफ से और उधर पत्नी का यह आलम कि वो इस घर मे एक पल भी रहने को तयार नही। अब क्या करूगा मैं, इधर जाऊगा या उधर जाऊगा। माताजी को कुछ समझाता हू तो

पत्नी के गुलाम और अगर पत्नी को कुछ कहता हू पति धर्म से विमुख माना जाता हू। आखिरकार झख मारकर मैंने पत्नी के साथ माता-पिता से अलग रहने का फैसला कर लिया और साहब ऐसा करना था कि समझिए आफतो का पहाड टूट पडा। अब तो घर का हर सामान लाने की जिम्मेदारी मुझ पर—नमक भी तब आए जब मैं लाऊ। कई बार तो सामान समाजवाद की तरह ऐसे गायब होते हैं कि मिलने की उम्मीद ही नही। घटो रो धोकर वापस घर आ जाता हू। और क्या-क्या सदमे गिनाए साहब, जो हम पर बीत रही है वो तो हम ही जानते हैं। लोग तो इस आफत में मुझे फसाकर बस तमाशा देख रहे हैं।

अब सोचिए गलती किसकी सजा मिले किसे—मगर हाय री किस्मत, अब इस जाल से निकला भी तो नहीं जा सकता। हालाकि शादी आवश्यक गलती है मगर है बहुत भयानक। खुश नसीब तो वो हैं जो आजन्म कुवारे हो, मगर कुवारे सोचते हैं काश हम भी शादीशुदा होते!

मेरा तो ये तजुर्बा है कि बस परेशानिया ही परेशानिया हैं। अगर पहले पता होता तो ऐसी गलती कभी भूलकर भी नहीं करता। मगर अब निराश होने से क्या फायदा। अब जब गलती हो गई है तो उस पर पछताना बेकार। बस यही सोचकर हम इस गलती के साथ अपना जीवन काट रहे हैं क्योकि अगर इसे ठीक करते हैं तो दुनिया वाले इसे और भी बडी गलती मानते हैं। मेरा मतलब आप समझ गए होगे। इसलिए वे सब दोस्त जो ये गलती कर चुके हैं इसे निभाए और जिन्होने ये गलती नही की वो अब ये गलती करने को तैयार हो जाए।

किराए का ही तो मकान है

"तुम्हारा कोई अपना मकान भी कभी होगा ?" सुनते-सुनते मेरे कान फटने से बाल-बाल बचे हुए हैं। लगता है किसी दिन फट जाएंगे, मगर मेरा मकान नही बनेगा।

जिस मकान मे इस समय मैं रहता हू वह मेरा नही है किसी और का है। मेरा तो मकान क्या कही पान की दुकान तक नही। कोई कमरा तक नही। हा, पत्नी की कमर अवश्य है जो अब कमरा ही लगती है। बडा सुकून है। अपना मकान न होने मे दुख क्यो है ? सब औरो के मकानो मे ही तो अपना बोरिया विस्तर डाले पडे हैं। जिनके पास अपने मकान हैं वे दूसरे घरो मे ही रह रहे है। ये कुछ अलग ही मजा है।

आजकल देश मे सारी जाति-व्यवस्था खत्म हो गई है। बस दो ही कौमे रह गई हैं—मकान मालिक और किराएदार। मैं नम्बर दो मे आता हू।

हातिमताई की तरह मैं हमेशा मकान की तलाश मे घूमता हू और जब कभी कोई बसेरा मिल जाता है तो लगता है कि हुस्न-बानो के सवालो का जवाब मिल गया है। शाहजहा ने ताज-महल बनवाकर भी शायद इतना अभिमान न किया हो जितना गरूर आज का मकान मालिक दो छोटे कमरे, एक अटैच बाथ-

रूम और घुटनभरी रसोई बनाकर करता है। एक दिन मैंने अपने मकान मालिक से बरसात में छत टपकने की शिकायत की, "क्यों साहब, ये छत से पानी कब तक टपकता रहेगा ?"

उन्होंने बड़ी मासूमियत से कहा, "मैं क्या जानूं मैं कोई मौसम विशेषज्ञ तो हूं नहीं।" कई बार ऐसे अवसर आए हैं जब मुझे मकान मालिक से किराए के बारे में रिमाइन्डर मिले। एक बार मैंने रात बारह बजे मकान मालिक की घंटी बजाई। आंखें मलते मलते उसने दरवाजा खोला।

"अरे, तुम ? क्या बात हो गई ? सब ठीक तो है ? आधी रात गए कैसे तकलीफ की ?" उसने पूछा। मैंने कहा, "नहीं, नहीं, ऐसी बात नहीं है। सब कुशल है। मैं तो ये कहने आया था कि कल पहली तारीख है।"

"वो तो मुझे भी पता है मगर यह बात कहने आने की अभी क्या जरूरत थी ? किराया कल शाम दे देना।" "यही तो कहने आया हूं। कल मैं किराया नहीं दे पाऊंगा। मैंने सोचा कि इस बात के लिए मैं अकेला ही क्यों परेशान रहूं।" और मैं अपने कमरे में आकर सो गया। पिछले दिनों जब मेरे शहर में भूचाल आया तो पत्नी ने घबरा कर मुझे जगाया। "अरे उठो, भूचाल आया है मकान गिर जाएगा।"

मैंने करवट बदल ली, "अरे छोडो, क्यों फिक्र करती हो! गिरता है मकान तो गिर जाने दो, किराए का ही तो है।"

चन्द तस्वीरे रेस्टोरेट की

ऐ मुसव्विर तेरे हाथो की बलाए ले लू
खूब तस्वीरें बनाईं मेरे बहलाने को।

किसी शायर के इस शेर को सुनने या पढने के बाद हमारे दिमाग मे एक तस्वीर उभरती है, बहुत ही हसीन, खूबसूरत, दिलकश, और नाजुक-नाजनीन की तस्वीर। कुछ लोग दिल के आइने मे न जाने कब से तस्वीरे यार लिए घूम रहे हैं और उस यार की हिम्मत को भी दाद देनी पडेगी जो बरसो से इस दिल की हवालात म कैद बैठा है और बोर नही हो रहा है। बहुत-से लोग अकसर अपने मेहबूब या मेहबूबा से तस्वीर देने की मिन्नतें करते देखे गए हैं, लेकिन यहा एक बात बिलकुल साफ हो जानी चाहिए, ये सब तस्वीरे फ्रेम मे जडी होती हैं और दीवार पर टगी रहती हैं। लेकिन आप से चलती-फिरती तस्वीरो का जिक्र कर रहा हू। हो सकता है आपका सबका भी ऐसी तस्वीरो से पाला पडा हो जो जबदस्ती आपके दिलो-दिमाग पर छाती चली गई हो। वसे तो हर जगह से चलती-फिरती नजर आएगी मगर आज मैं आपको एक खास जगह की तस्वीरो से मिलवाऊगा। आप भी उन तस्वीरो से दो चार हो चुके होगे, ऐसा मेरा यकीन है। रेस्टोरेन्ट के बारे मे तो आप जानते ही होगे, इसे अगर शहर का

शर्म आती है

अजायबघर कहा जाए तो मेरे खयाल से ज्यादा ठीक रहेगा। तरह-तरह के लोग अलग-अलग वेशभूषाए, विभीसरगन पान सब एक ही जगह देखने को मिल जाते है। सडक छाप शायर से लेकर चोटी के नेता तक यहा पाए जाते ह। ऐसी-ऐसी अजीव तस्वीरें देखने को मिल जाती है कि वस दिल थाम लेना पडता है। मरी आख चारो तरफ आइने की तरह घूमकर चारो तरफ का जायजा लेती है और एक टेविल के पास रुक जाती है। एक खूबसूरत जोडा, शायद अभी अभी शादी हुई है, फुसफुसा रहा है क्या बातें कर रहे है कुछ समझ मे नही आ रहा है। वसे भी आदमी जव फुसफुसाता है तो किसी के कुछ समझ मे नही आता है। अचानक ही वो न जाने क्यो सिसकने लगती है, शायद किसी गभीर वात पर आसू आ गए है। अब शब्द भी साफ सुनाई पडने लगे ह। मेरा पति-पत्नी वाला अदाज शब्दो ने गलत साबित कर दिया। पता चला कि प्रेमी की आर्थिक स्थिति कुछ डावाडोल होने के कारण प्रेयसी को वो आराम नही मिल पा रहा जिसकी उसने कल्पना की थी। हाय बेचारा प्रेमी ! मेरी आखें अधिक देर तक इस जोडे पर नही ठहर सकी, साथ वहा से आगे बढ गई। मैं कुछ देखने की कोशिश कर ही रहा था कि एक कोने से एक आवाज निकली, "अरे भई यहा आ जाओ, हम तो यहा बैठे हैं।" स्वर कुछ जाना-पहचाना-सा लगा, आह कविवर वोडम थे। न जाने कब से अपनी वोर रचनाए सुनाने के लिए यहा बेताव बैठे हैं। न चाहते हुए भी मुझे उनकी तरफ बढ जाना पडा। पास जाते ही वोडम वोले, वठो यार, ये क्या खोए-खोए दिख रहे हो ! बोलो क्या लोगे, ठडा या गरम। मैंने उनकी आखो मे झाककर ये मालूम करने की कोशिश की, क्या वे बिल अदा कर देंगे ? लेकिन आखो की मायूसी ये कह रही थी कि आज भी पेमेंट मुझे ही करनी पडेगी इसलिए जरा इकोनोमी के लिहाज से कहा, नही वोडम साहव चाय ही चलेगी।

इसके बाद बौडम जी ने अपनी रचनाओ के सैलाब मे ऐसा बहाया कि मुझे तो ये भी पता नही चला कब चाय आई, कब पी गई और कब बौडम जी उठकर चले गए। मैं तो जमीन पर तब वापस आया जब बैरे ने कहा, साब बिल। मैंने बेयरे पर नजर डाली। इस रेस्टोरेन्ट की ये भी तो एक तस्वीर है जो सोए हुए आदमी को जगाकर उसे चेतन होने का अहसास कराता है। कितना अच्छा होता मैं सोया होता, क्योकि यहा का दर्शन कबीर से मेल नही खाता। यहा तो जो सोवत है सो पावत है और जो जागत है सो खोवत है।

पैसे देकर बैरे को विदा किया और फिर इधर-उधर झाका। देखता क्या हू एक भीमकाय शरीर की काली-कलूटी महिला रोलर की तरह धरती समतल करती हुई अपने निहायत दुबले-पतले पति के साथ मेरी ही तरफ बढी चली आ रही है। मैंने मन ही-मन भगवान का स्मरण किया और सभलकर बैठ गया। मेरे ही सामने की दो कुर्सिया खाली थी। महिला आते ही गरजी—आपको अगर ऐतराज न हो तो हम यहा बैठ जाए? मैंने सोचा अगर ऐतराज हो भी तो मैं क्या बिगाड सकता हू। फिर जरा नम्र होकर बोला—क्यो नही, क्यो नही, अवश्य बैठिए। भला मुझे क्या तकलीफ हो सकती है। महिला बेचारी कराही, चरमराई और फिर अपनी मजबूर हालत पर खुद ही खामोश हो गई। काले रग पर चटख पीली साडी—सरसो के खेत मे भैंस की उपमा को साकार कर रही थी। फिर मैंने देखा पति लगभग गिड-गिडाता हुआ बोला—क्या पियोगी सुशीला—? तो सुशीला आखें तरेर कर बोली, कुछ भी मगवालो जी, मेरा मूड मत खराब करो। मैं सुशीला जी की तरफ देखता रह गया। इस रूप पर ये नाम मुझे नाम की दुर्गति लग रही थी। अचानक सुशीला जी मेरी तरफ मुखातिब होकर बोली—आपके बारे मे कुछ जान सकती हू? इस

अचानक हमले से मैं घबरा गया फिर भी अपने आपको सभाला और काफी सहज होकर मैंने कहा, हा-हा—क्यो नही, मैं एक लेखक हू, मेरा नाम ये है । आजकल मैं रेस्टोरेन्ट के लोगो पर कुछ लिख रहा हू । ये सुनते ही उनकी बाछें खिल गई । बडे ही बुरे ढग से लजा कर कहने लगी, ये तो बहुत अच्छी बात है—क्या आप मुझ पर भी लिखेंगे और यह कह कर वो कुछ और शरमाई तो लगा तूफान सा आ गया । मैंने कहा, अवश्य, आप पर तो खासतौर से लिखूगा । चेहरे पर भयानक मुस्कान फैलाते हुए बोली, जरा सुन्दर-सा वर्णन करिएगा मेरा । मैंने कहा, मैडम आपका तो वो बयान करूगा कि लोग बिहारी की नायिका को भूल जाएगे । और साथ ही उसके हुस्न को देखकर ये इच्छा भी जाग गई कि मैं अधा न हुआ । अब समझ मे आया कि सूरदास की गोपिया इतनी सुन्दर क्यो थी । अब जो कुछ भी उन पर लिखना था सो लिख दिया, लेकिन भगवान करें सुशीला जी इस लेख को नही पढें । वरना वो मेरा सारा खाया पीया बाहर निकलवा लेंगी, उनके पास तो मेरा घर का पता भी है ।

सुशीला जी से मिलने के बाद अब देखने को क्या बाकी रह गया था । मैं वहा से उठने का इरादा कर ही रहा था कि हकीम साहब आ धमके । एक रगीन तस्वीर, लखनवी चेनदार कुर्ता, खसखसी दाढी, सी सर पर बेंत की बनी टोपी, परो मे कामदार जूतिया और ऊचा-सा तहमद बस ये ही हकीम साहब लगते हैं । चिडीमार, ये वो हकीम है जो हर मर्ज का इलाज शेर सुनाकर करते है । आजकल ये इस रेस्टोरेन्ट के मैनेजर का इलाज कर रहे हैं जिसका जिगर बढ रहा है । मेरे नसीब मे हकीम साहब के शेर भी लिखे थे सो सुने । शेर सुनता रहा और सर धुनता रहा । कई बार उनको रोककर पूछने की कोशिश भी की—आपके पास सब रोगियो का इलाज है, मगर आपकी शायरी के मारे का क्या इलाज है ? हकीम साहब तो ऐसी बातें सुनते ही नही । बडी मुश्किल से नजर बचाकर मैं रेस्टोरेन्ट से बाहर आया हू ।

तलाक का मुकदमा

दृश्य अदालत की गरमागरमी 'शोरा शराबा' आने-जाने वालो के स्वर और फिर बीच मे से जज की आवाज का उभरना।

जज आर्डर-आर्डर—हा तो आज का मुकदमा पेश किया जाए। सबसे पहला केस लक्ष्मी विरुद्ध गोपाल। इन्हे हाजिर किया जाए।

दोनो हम तो हाजिर हैं हुजूर—कब से कटघरे मे खडे हैं।

जज इन्हे कसम दिलवाइए।

गोपाल किस बात की कसम साब ये कसमे यहा भी चलती हैं क्या?

जज खामोश रहिए—ये अदालत है—आपका घर नही—जहा आप चाहे जो बोलें।

गोपाल हुजूर, वह भी कहा बोल पाता हू। मौका ही नही देती श्रीमती जी मुझे बोलने का। वैसे माफ करें हुजूर—जज साहब घर पर तो आप भी नही बोल पाते होंगे।

जज ओह शटअप, ये क्या वकवास है। बहुत बेवकूफ है आप!

लक्ष्मी जज साहब ये मेरे पति हैं। अब आप ही सोचिए ऐसे

आदमी के साथ जीवन कट सकता है। बस इसीलिए हम तलाक लेने आए हैं।

जज ये तलाक आप दोनो अपनी मर्जी से ले रहे है।

गोपाल मेरा कहना है जज साहब कि कोई भी पति पत्नी पडोसियो की मर्जी से तो तलाक लेता नही है।

जज फिर वो ही बकवास—आपसे किस गधे ने पूछा है।

लक्ष्मी इतनी देर से आप ही तो पूछ रहे हैं हुजूर!

जज (झल्लाकर) ओफ्फो! कैसे अजीब लोगो से पाला पडा है। मैं आपसे चन्द सवाल करता हू उनका जवाब दीजिए।

दोनो पूछिए।

जज आप तलाक क्यो लेना चाहती है।

लक्ष्मी आप तो ऐसे अकडकर पूछ रहे हैं जैसे मैं तलाक अपने पति से नही आपसे ले रही हू।

गोपाल अरे, काश—ऐसा होता।

जज आप लोग बहुत बदतमीज हैं। अच्छा चलिए लक्ष्मी जी बताइए आप अपने पति से तलाक क्यो लेना चाहती हैं।

लक्ष्मी पहला कारण तो ये है कि ये मेरी बिल्कुल तारीफ नहीं करते और करते भी हैं तो फूल ढग से।

जज कैसे—जरा बताइए।

लक्ष्मी एक बार की बात है। हम कही किसी और की शादी मे जा रहे थे।

[फ्लैश बैक सगीत]

गोपाल अरे अब आओगी भी या यू ही सारा समय बर्बाद करोगी।

लक्ष्मी आ ना रही हू, क्यो आसमान सिर पर उठा रखा है।

सुनो इधर देखो मै कैसी लग रही हू इस पीली साडी मे बताओ ना।

गोपाल जैसे सरसो के खेत मे केसर खडी है।

लक्ष्मी (क्रोध से) क्या कहा ?

गोपाल नही-नही, जैसे भैंस पर सरसो का गट्ठर रखा है।

[अदालत मे हमी के स्वर। फ्लेश बैक खत्म]

लक्ष्मी अब आप ही बताइए ये कोई बात है।

जज आर्डर-आर्डर, और कोई बात।

लक्ष्मी एक नही कई हैं माई-बाप।

जज बताइए तो।

लक्ष्मी मेरी माता जी कभी मेरे यहा आ जाती हैं।

गोपाल (बीच मे) कभी-कभी नहीं जज साहब वो तो जब से शादी हुई है तभी से कुण्डली मार मेरे घर मे ही बैठी हैं बल्कि मुझे तो याद है कि शायद शादी के बाद ये मेरे घर बाद मे आई और मेरी सास पहले ही मेरे घर आ गई।

जज फिर आप बीच मे बोले—चुप रहिए। हा तो लक्ष्मी जी, फिर क्या हुआ ?

लक्ष्मी एक दिन मैं और मेरी माता जी घर के आगन मे बैठे धूप खा रहे थे।

गोपाल और तो कुछ छोडा ही नही इन्होने घर मे।

जज आप चुप रहिए।

लक्ष्मी इतने मे एक सज्जन आए।

[फ्लेश बैक]

सज्जन क्या मैं अन्दर आ सकता हू श्रीमान ?

गोपाल आप तो पहले ही अन्दर धमक चुके है।

सज्जन ओ क्षमा कीजिए, मैं विधवा आश्रम से आया हू।

गोपाल (आश्चर्य से) है, आप यहा क्या कर रहे हैं आपको तो विधुर आश्रम मे होना चाहिए था।
सज्जन आप समझे नही श्रीमान, मैं विधवा आश्रम का सचालक हू, उसके लिए कुछ लेने आया हू।
गोपाल अच्छा अच्छा तो आप विधवा आश्रम के लिए कुछ लेने आए हैं।
सज्जन ठीक समझे श्रीमान आप!
गोपाल तो ऐसा कीजिए, ये हमारी विधवा सास यहा बठी हैं इन्हे ले जाइए।

[फ्लेश बैक—हसी के स्वर]

लक्ष्मी अब सोचिए जज साहब, मैं रह सकती हू इनके साथ?
गोपाल अरे जज साहब क्या सोचेंगे, सोचना तो मुझे है।
लक्ष्मी इन्हे मेरा कोई भी रिश्तेदार फूटी आख नही भाता। एक बार मेरा भैया

[फ्लेश बैक]

लक्ष्मी सुनो जी, सुन रहे हो?
गोपाल हा सुन रहा हू और सिर धुन रहा हू।
लक्ष्मी मुन्ना जिद कर रहा है।
गोपाल किस बात की?
लक्ष्मी कहता है कि चिडिया घर मे जाकर क्या देखूगा।
गोपाल तो उससे कह दो चिडिया घर मे जाने की क्या जरूरत है, उसके मामा यही आए हुए हैं।
लक्ष्मी तो क्या मेरा भाई बदर है?

[हसी के स्वर]

जज आर्डर-आर्डर, शात रहिए। हा गोपाल, अब आपकी बारी है।
गोपाल बडे बरसो के बाद बारी आई है। जज साहब!

आपको इसकी एक ही बात सुनाता हू ।

[फ्लेश बैक—पार्टी का स्वर]

गोपाल आप सच बहुत अच्छी हो ।

उर्मिल सच, अच्छी लगी आपको ?

गोपाल कभी आइए आप हमारे घर पर ।

उर्मिल अवश्य आऊगी, इन्तजार मे रहिए ।

[तडाक से चाटा पडता है ।]

गोपाल अरे क्या बकवास है, आपने ये चाटा क्यो मारा है मुझे ।

उर्मिल आप निहायत घटिया और बदतमीज आदमी हैं ।

गोपाल क्यो, क्या किया है मैंने ?

उर्मिल आपने बैठे-बैठे ही मुझे चिकोटी काट ली ।

गोपाल हैं, अरे नही-नही मैंने नही काटी, सच लक्ष्मी मैंने नही काटी, उठो लक्ष्मी चलो यहा से चल देते हैं ।

[पाज]

गोपाल सच लक्ष्मी मैंने उसके चिकोटी नही काटी, मैं तुम्हारी कसम खाता हू ।

लक्ष्मी मुझे मालूम है तुमने चिकोटी नही काटी है ।

गोपाल सच तुम्हे कैसे पता है कि चिकोटी मैंने नही काटी ?

लक्ष्मी इसलिए कि चिकोटी मैंने काटी थी वरना तुम वहा से दो घन्टे तक उठने का नाम भी नही लेते ।

[हसी के स्वर]

गोपाल अब तो मालूम हुआ जज साहब कि ये कैसी है ।

जज और तो सारी बाते ठीक हैं, मगर आपके ये तीन बच्चे प्रॉब्लम है तलाक मे। आपकी शादी को चार साल हुए हैं और आपके तीन बच्चे यानी हर साल एक ।

लक्ष्मी तो इसमें क्या तकलीफ है जज साहब ?

जज तीन बच्चो को हम आपको कैसे आधा-आधा बाट दें। डेढ़-डेढ़ बच्चा देने से रहे।

लक्ष्मी अरे हा, इस बात पर तो सोचा ही नही था। तुमने भी नही बताया।

गोपाल मैं तो भूल ही गया कि हमारे बच्चे भी है, अब क्या करें ?

लक्ष्मी अरे तो इसमें दुखी होने की कौन-सी बात है ! अगले साल सही जज साहब, हम अगले साल तलाक लेंगे जब चार बच्चे हो जाएगे।

जब मै सरकार बनाऊगा

'सरकार से तौबा मेरी सरकार से तौबा' जब भी कभी ये गीत सुनता हू तो सीधी नजर पत्नी पर जाती है। इनके होते कही और जाने के चास भी नही। जमाने-भर मे जम्हूरियत आ गई है मगर अपने घर मे तो पिछले कई सालो से ये तानाशाह 'सरकार' ही चली आ रही है। बरसो से ये दिये और तूफान की कहानी घिसट रही है। निश्चित है दिया यानी कि पिया ही कमजोर साबित होगा। खैर मैं देश की सरकार से घर की सरकार की तरफ खिसक गया। मजबूरी है न अपने देश की। यहा सब लोग विषय से हटकर ही बात कर रहे हैं। गायक फुटबॉल की बात करते है, नेता फिल्मो मे विलेन बनने की अटकल लगा रहे हैं तो अभिनेता और कलाकार सीधे राजनीति के मच पर धमक रहे हैं या कहे कि चमक रहे हैं। मैं तो इतने दिन मे खामोश बैठा था वरना आप क्या समझते हैं मैं सरकार मे नही आ सकता ? जब यू ही कई लूले-लगडे, ऐरे-गैरे, नत्थू खैरे इस फील्ड मे जाकर अपनी बेसिर-पैर की हाक सकते हैं तो मुझमे क्या कमी है ? दोस्तो ने कई बार राय दी कि सरकार मे आ जाओ, तुम भी अपनी सरकार बना लो, मगर मैं ठुकराता रहा। मुझे जच ही नही रही थी, सोचता था यहा क्या बुरे हैं ? मगर

अब तो पानी सर से गुजर चुका है। कई राज्यो मे नेतृत्व परिवतन के समय मुझे ऑफर आये। सबकी नज़रें मुझ पर लग जाती मगर मैं सबसे नजरे चुरा लेता। सरकार बनाने के चक्कर से बाल-बाल बच जाता।

लेकिन अब लगता है दोस्त नही मानेंगे। यार लोग मुझसे सरकार बनवा कर ही दम लगे। इन सबको तो मैं टरका भी देता मगर इस बार तो घर की सरकार ने भी मुझे अल्टीमेटम दे दिया है कि जब तक मैं अपनी सरकार नहीं बनाकर दिखाऊगा वो मुझे अपनी सरहद मे घुसने तक नही देंगी। अब आप ही बताइए, टाल सकता हू उनकी बात को ? मानना ही पडेगा। पत्नी से प्रेरणा लेकर तो लोग महान् बन गये हैं। अभी कुछ दिनो पहले तो एक व्यक्ति बीवी की फरमाइश पर डाकू भी बन गया था, गोया डाकू बनना नही विविध भारती का कार्यक्रम हो गया। तो जब लोग इतने घटिया काम भी घर की सरकार के आदेश पर कर सकते हैं तो मैं तो देश के इतिहास मे एक जबर्दस्त मोड लाऊगा। इसलिए अब की बार मैंने भीष्म प्रतिज्ञा कर ही ली है कि अब मैं सरकार बनाऊगा। मेरे मित्रो ने मुझसे मेरा घोषणा-पत्र मागा है। मैं इन दिनो सारे काम छोडकर बस इसी पर गहन विचार कर रहा हू। जिन बिन्दुओ पर मैं निर्णय पर पहुच गया हू, सोचता हू—सक्षेप मे वो आपको भी बता ही दू क्योंकि आखिरकार ये सब जनता के सामने तो आना ही है न।

हमारे इस मुल्क की बागडोर किसके हाथो में दी जाए सो वो तो मैं हू ही। मुझे पतगबाजी मे कई तमगे मिले हैं

मत्रिमडल की आवश्यकता क्या है। यहा तो 'कमडलों' की जरूरत है।

मेरे सभी कवि और कवयित्रिया बस गवनर बनाकर जगह-

जगह भेज दिए जायेंगे ताकि हर तरफ साहित्य का बोलबाला रहे।

'चुनाव' का नाम बदल कर 'तनाव' रखा जायेगा। इस नाम में देश की वास्तविकता झलकती है। खाद्यमंत्री के स्थान पर अब वाद्यमंत्री हुआ करेंगे और रक्षामंत्री को रिश्वत मंत्री कहा जाने लगेगा।

सरकारी अधिकारी उन्हें ही बनाया जायेगा जो गबन में एक्सपर्ट हो, घूस और रिश्वत में महारथी हो। जो जितना अधिक घोटाला करेगा उसे उतना ही योग्य अफसर समझा जायेगा। मेरी सरकार का राष्ट्रीय चिह्न होगा—'चम्मच'। सब वादों को समाप्त कर बस चमचावाद चलाया जायेगा।

साहित्य का सबसे बड़ा पुरस्कार अब 'अज्ञान ढीठ पुरस्कार' होगा। हमें यकीन है इसे पाने के हकदार देश में बहुत होंगे।

राजधानी तो जो है सो ही रहेगी। मुहम्मद तुगलक ही इसे बदल सकता है।

पुरस्कारों की बात चली तो कुछ और भी याद आया जो मैंने सोचा है। ये जितने भी 'चक्र' पुरस्कार हैं इन्हें 'कुचक्र' पुरस्कारों में बदल दिया जायेगा। जैसे—वीर कुचक्र या परमवीर कुचक्र आदि। कीर्ति पुरस्कारों के स्थान पर 'अपयश' पुरस्कार आ जायेंगे। इन पुरस्कार पाने वालों की कमी हमारे यहां नहीं है। राष्ट्र का सबसे बड़ा पुरस्कार होगा—'देश कलंक। ये पहले भी कई लोगों को दिया जा चुका है और अब भी इसके लिए अनेक लोग उम्मीदवार हैं। स्कूल-कालेज अब बन्द कर दिए जायेंगे। बहुत हो गये पढ़े लिखे। अब इनमें मिलें लगा दी जायेंगी। छात्र-छात्राओं को सिनेमा हॉल के सामने बस प्रदर्शन के लिए रखा जायेगा।

विदेश नीति का लेना देना ही क्या है। जब हमसे अपनी

ही नही सभल रही है, तो दूसरो के फटे मे पैर क्यो उलझाए।

वोट शब्द मे बडा खोट आ गया है। अब बस नोट चला करेंगे। सरकार का फिर घाटे मे आने का सवाल ही क्या है।

मेरे ख्याल स इतना गूढ चितन इस समय किसी का नही हो सकता जितना मैं कर रहा हू। और भी ऐसी ऐसी बातें आपको बताऊगा कि आप भी याद रखें। मैं तो भले की ही बात करता हू। इस देश की भलाई की।

अरे-अरे—ये क्या—ये मैं क्या कर रहा हू। मैं तो नीचे फश पर आ गया, खाट पर से आगन मे आ गया। ओहो तो गिर गया? तोऽऽतोऽऽये सपना था जो मैं देख रहा था। अरे तकदीर! कुछ देर तो सपना बना रहता। मगर ये भी गवारा नही। ओहो—लगता है घर की सरकार भी आ रही है। उठ जाता हू। चला भैया—हम खाट से नीचे गिरे—तो हमारी सरकार भी गिर गई

बात—बनाये न बने

मिर्जा हाय-हाय खा क्या होरिया है यहा—कमबख्त दम घुटा जा रिया है (खासी) आफ हो—सारा-का-सारा आखो मे भी धुआ जारिया है (चिल्ला कर) अरे बेगम जान कहा हो खा, अरे बोल तो दो अरे बेगम जान।

बेगम अये क्यू गला फाड रिये हो, सारा घर सर पर उठा लिया। क्या है जल्दी कहो (डाट कर)।

मिर्जा अरे खा बेगम धीरे बोलो खा।

बेगम अच्छा कहो क्यो घबरा रिये थे।

मिर्जा अरे खा मैं कह रिया था कि यह घर है या धुआ-खाना। देखो चारो तरफ धुआ-ही धुआ होरिया है।

बेगम अये हये तो भई लकडिया ही गीलर है तो मैं क्या करू, फूकते-फूकते मेरा तो दम घुट गया और तुम हो कि जरा सा आखो मे घुस क्या गिया डकराने लगे।

मिर्जा अरे खा मैं फिर कह रिया हू धीरे बोलो खा धीरे, मैं दिल का बहुत कमजोर हू खा।

बेगम हाय हाय मुआ तुम्हारा दिल न हुआ कमबख्त छुट्टन खा के होटल का खस्ता कबाब हो गया जो हाथ मे लेते ही टूट जाए।

मिर्जा अरे ऐसा न कहो, खा बेगम जान, ऐसा न कहो, बेगम जान। 'ये दिल कबाब नही है, इसको अमरूद समझो अरे—इसे कच्चा ही चबा जा तले क्यू है।'

बेगम भला मैं क्यू चबाने लगी मुए तुम्हारे दिल को? मुझे क्या तुमने अल्लारखी की बेकरी समझा है मिया क्या?

दिलबर अरे-अरे चबाने की बात मत करो खा बेगम जान, मुझे नही तो कम-से-कम इस दिल को ही सभाल कर रखो, देखो याद करो खा वह दिन बेगम जान जब हमारा और तुम्हारा निकाह हुआ था और तुमने और मैंने अपने अपने दिल एक दूसरे को देने के लिए एक बार नही तीन तीन बार कुबूल किया था।

बेगम हा हा मुई उसी गलती की सजा तो अभी तक भुगत रही हू।

दिलबर अरे सजा तुम नही भुगत तो मैं रिया हू (धीरे से)।

बेगम क्या कह रिया हो?

दिलबर अ कुछ नही खा कुछ भी तो नही कह रिया। मुझे तो खा बस एक याद आरिया है।
भोपाल का है दिल बडी कमजोर चीज है
लेकिन ये क्या टिके है बीबो तेरी जबा के सामने

बेगम क्या कह रिये हो (रोकर) हा अब तो तुम्हे मेरी जबान भी बुरी लगने लगी, कल को मुई यह शायरी, मुझे भी बुरी कर देगी। आग लगे कम-

वम्न तुम्हारी शायरी को, अल्लाह करे इस मुई की आख फूट जाये, हाय-हाय सरकार को नशाबदी के साथ-साथ शायरी बदी भी कर देनी चाहिये, ये भी तो कमबख्त दूसरो का घर बर्बाद करती है।

दिलबर अरे खा बेगम जान, तुम नही जानती खा तुम नही जानती, शायरी की ऐसी आखे नही होती जैसी तुम्हारी हैं इसकी आखें तो खा जिसम के अदर होती हैं और उन्ही आखो से यह सहरे सही देखती है। अगर इसे तुम्हारी आखें मिल जाये तो खा फिर इसे कुछ भी नजर नही आयेगा।

बेगम हा-हा समझ रहो हू—सब समझ रही हू (रोती हुई) मुझे अधा कहरियो हो—हा कह डालो और कह डालो, मैं आज ही अपने अब्बा के यहा चली जाऊगी, फिर खूब ठडक पहुचाना अपने दिल को (जाते हुए) आग लगे कमबख्त इस शायरी को।

दिलबर अरे कहा चल दी बेगम जान, सुनो तो खा। लो चली गई (सात-आठ बच्चो की आवाज)।

बच्चे (एक साथ बोलते हुए) अब्बा—अब्बाजान अब्बा-जान!

दिलबर अरे चुप करो, काहे को सर खाये जा रिये हो! कमबख्त घर नही होगिया कोई मदरसा होगिया।

बेगम (दूर से आते हुए) हा-हा अब बच्चे बचे हैं। उनसे भी कह डालो। देखो मैं कहरी हू कि बच्चो से कुछ न कहना वरना

दिलबर वरना क्या ?

बेगम हा-हा क्या पूछ रिये हो—पूछो पूछो चुप क्यो हो गिये ?

दिलवर नही खा नही मैं पूछ नही रिया सोच रिया हू खा कि—

कभी-कभी मेरे दिल मे खियाल आता है
बच्चो का जाल बिछाया गया है मेरे लिए
मैं इससे पहले कुआरा ही ठीक था बेगम
घर मे इस फौज को बिठाया गया है मेरे लिए

बेगम अये हये तुम तो ऐसे कह रिये हो जैसे मैं आठ बच्चो को अपने मायके से साथ लाई थी। तुम्हारा ही तो कमबख्त किया-धिया है यह सब वरना मेरा क्या—

दिलवर हा-हा तुम्हारा क्या, सारा कुसूर मेरा ही तो है।

बेगम अये हये तुम्हारा नही तो फिर किसका होगा। पहले कहती थी देखो उतने ही पर फैलाओ जितने चादर मे समा सकें, लेकिन मेरी एक नही सुनी। अब लगे सर पकडने और डकराने—अये मिया खुद ही सोचो कि जुम्मन मिया के तागे मे सवारिया आती है, अब तुम उस तागे मे 10-12 सवारियो को बिठाल लो तो कमबख्त घोडे का क्या होगा—थोडी दूर चलकर फेफडे डाल देगा मिया।

दिलवर हा बेगम जान ठीक कह रियो खा, अपनी हालत भी अब थोडे दिनो मे ऐसी ही होने वाली है।

बेगम (शरमा कर) अये चलो हटो मुई ऐसी बातो को मुह पर न लाओ, अये हा मैं तो तुमसे कहना कमबख्त भूल ही गई कि आज अपनी नसीमन और सलीमन के लिए मुई कल्लो ने दो लडके देखे हैं—आज वो दोना घर आयेंगे तो तुम घर ही रहना—

अय हये मैं क्या उन धीगडो से बात करुगी ! जरा तुम ही बात कर लेना और देख लो कि लडके ठीक-ठाक रहेगें।

दिलवर देखो वेगम जान, लडको को देख तो लूगा पर ठीक-ठाक रहने की गारटी मैं नही ले सकूगा खा। हा पहले ये वता रिया हू, कही फिर वाद मे तुम मेरे पीछे पड जाओ

बेगम अय हय, जरा थोडी तो शरम करो, क्या अब भी मैं तुम्हारे पीछें ही पडी रहूगी।

दिलवर तो अब खा किसके पीछे पडने का इरादा होरिया है ?

वेगम अये चलो हटो मुई दिल्लगी न करो (जाते हुए) अच्छा तो मैं वावर्चीखाने मे हू। कोई आये तो पुकार लेना और जाना नही कही समझरिये हो—

दिलवर समझरिया हू खा सव समझरिया हू। बेटा दिलवर भोपाली, अब पता चलरिया है खा कि शादी के वाद ज्यादा बच्चो के बाप बनने के बाद कैसा मजा मिलरिया है—हाय हाय !

आफतें आयेगी सर पर मुझे मालूम न था
इस तरह फूटेगा यह सर मुझे मालूम न था
मैं तो समझा था मेरे प्यार का तू ताजमहल है बेगम
अरे तू ही आफते जा बनेगी मुझे मालूम न था
[खटखटाने की आवाज और पुकारने का स्वर]

रुस्तम (जोर-जोर से) मैंने कहा जनाब मिर्जा दिलबर भोपाली साहव !

दिलवर लो शायर पहले दामाद साहव आ धमके हैं—अरे हा भई आरिया हू खा। (दरवाजा खोलने की

आवाज)

रुस्तम अस्सलामोअलेकुम।

दिलवर वालेकुम सलाम खा भाई मिया—फरमाइये किससे मिलना है।

रुस्तम जनाब दिलवर भोपाली का दौलतखाना यही है न।

दिलवर जी हा जी हा, मिर्जा दिलवर भोपाली का गरीबखाना यही है और नाचीज को ही जनाब, मिर्जा दिलवर भोपाली कहते है। अरे वहा क्यो खडे हो खा मिया अदर तशरीफ लाइये, हा यहा तशरीफ रखिए जी हा।

रुस्तम जी शुक्रिया।

दिलवर मिया क्या मैं यह जानने की गुस्ताखी कर सकता हू कि आपका इस्मे शरीफ क्या है ?

रुस्तम जी मुझे रुस्तम उर्फ मल्लू उस्ताद कहते है।

दिलवर माशाअल्लाह तो रुस्तम उर्फ मल्लू उस्ताद, आप क्या करते हैं मिया ?

रुस्तम जी, पहलवानी।

दिलवर पहलवानी ! खर वह तो ठीक है खा, लेकिन मैं पूछरिया हू कि आप काम क्या करते है।

रुस्तम जी कुछ नही।

दिलवर कुछ नहीं, तो खा खाते क्या हो खा भाई मिया ?

रुस्तम जी सुबह सिर्फ पाव भर बदाम के हल्वे का नाश्ता, दोपहर मे सिर्फ दस-पद्रह रोटी और कोरमा और शाम को सिर्फ—

दिलवर बस खा भाई मिया बस समझ गिया खा अब समझ गिया, मैं तो आपके सिर्फ से ही समझ गिया

खा कि आप क्या हैं।

रुस्तम अरे आपने मुझे अभी समझा नहीं क्या ? पिछले दिनों जनाव जब बगम गज मे दंगल हुआ था तो मैंने कसम जुम्मन उस्ताद की, अकेले चार पहलवानों को हराया था और एक के तो वह पिछाडी दाव मारा था कि उसकी पिछाडी ही जाती रही थी।

दिलबर तो मिया फिर वह पिछाडी कहा चली गई, उस पहलवान के पास लौटी या नही कमबख्त।

रुस्तम (झेंप कर) अरे आप तो मजाक कर रिए है मेरा मतलब था कि

दिलबर बस समझगिए खा समझ गिया—अच्छा यह बताओ कि आपके अब्बा मिया क्या करते है।

रुस्तम जी वह हड्डिया को जोडते हैं।

दिलबर क्या मतलब खा अरे जरा साफ-साफ बताओ खा—

रुस्तम जी अगर जिस्म की कोई हड्डी अपनी जगह से खिसक जाए तो उसको ठीक बिठा देते हैं।

दिलबर और अगर खा जिस्म की काई हड्डी टूट जासे तो दूसरी फिट कर देते हो।

रुस्तम (झेंप कर) जी आप तो मजाक कर रिए है।

दिलबर अच्छा मिया आपके अब्बा मिया के कितने बच्चे है यानि आपके भाई बहन ?

रुस्तम जी सिर्फ 6 बहनें और भाई 7।

दिलबर (धीरे से) यानि सिफ 13 बच्चे—माशा अल्लाह मिया अल्ला और तरक्की दे। (हसते हुए) अच्छा तो मिया रुस्तम कि—जर हा जी हा भला उस्ताद आपका शादी के बारे मे क्या इरादा है।

रुस्तम (शरमा कर) जी कर लूगा।

दिलवर (अपने आप से) लो तो उधर ही वैठे है साहब जादे। अच्छा यह वताइए क्या आप शायरी भी करते हैं।

रुस्तम जी मैं आपका मतलब नही समझ रिया—वडे मिया।

दिलवर (गुस्से मे) क्या कहा मिया वडे मिया, अरे क्या मैं तुझे वूढा नजर आरिया हू। वता-वता चुप क्यो हो गिया।

रुस्तम (गुस्से मे) आप वूढे है तो मैंने वडे मिया कहा इसमे आप इतने नाराज क्यो होरिए है। समझ क्या रिए हैं आप।

दिलवर (डर कर) समझ रिया हू खा ममझ रिया हू (अपने मे) अरे मैं तो भूल ही गिया कि आप पहलवान हैं।

रुस्तम जी अब मैं जाऊ। सलामापैकुम।

दिलवर जी हा तशरीफ ले जाओ या—वालेकुम सलाम—ओह् वचे खाक वचे। अगर थोडा झगडा और वढ जाता तो यकीनन मुझे भी उसके बाप के पास हड्डी जुडवाने जाना पडता।

वेगम (आते हुए) अये हये क्या हुआ वह लडका आया था कसा था मिया, कुछ ठीक था अपनी नसरमन के लिए कसा रहेगा। (गुस्से मे) अये हये मेरा मुह क्यो ताके जारिए हो कुछ वोलोगे भी या।

दिलवर (चौंक कर) एँ वह पहलवान हा-हा ठीक रहेगा बिल्कुल ठीक रहेगा और तुम्हारी लडकी के लिए तोबिल्कुल ही ठीक रहेगा वह पहलवान।

वेगम (खुश होकर)) हाय-हाय क्या वह पहलवानी करता है तो तो ठीक है चलो मुई शायरी तो नही

करता कमबख्त ।

अच्छनमिया (दरवाजा खटखटाने की आवाज) जनाब मिर्जा साहब तशरीफ रखते हैं क्या ।

बेगम लो मुया शायद वह दूसरा होने वाला दामाद आ गिया । (जाते हुए) मैं चलती हू तुम उसे सभालो और देखो ठीक से बात करना उससे वरना ।

अच्छनमिया (जोर से) अरे मैं कह रिया हू कि जनाब मिर्जा तशरीफ रखते है क्या ?

दिलबर (जोर से) अरे रख रिये हैं खा रख रिये हैं। (दरवाजा खुलने की आवाज) लो खा हाजिर हो गिया फरमाईये आपको क्या हो गिया ।

अच्छनमिया हाय हाय हाय हाय, मिसरा हो गिया खा मिसरा हो गिया हा तो आप पूछ रिये हैं। मुझे क्या हो गिया । अरे जनाब ये पूछिए क्या कुछ न हो गिया । दिल ही जान रिया है खूबिया उसकी
मुद्दतो से वह इस दिल मे रह रिया है ।

दिलबर वाह वाह मिया मब्वान अल्लाह अदर आइये । जी हा यहा तशरीफ रखिये तो जनाब का नाम पूछने की गुस्ताखी कर सकता हू खा

अच्छनमिया पहले आप कह रिये थे क्या हो गिया अगर अब आप मेरा नाम पूछ रिये हैं। खैर कोई बात नहीं। आप भी क्या याद रखेंगे। लीजिए सुनिये बता रिया हू। सब खाकसार को अच्छन मियाँ जरमी कहते हैं। और (शरमा कर) अब्बा मिया प्यार से अच्छू कहते है।

दिलबर चलिये ठीक ही कहते हैं। खा—बिच्छू तो नही कहते। खैर।

अच्छनमिया अरे जनाव विच्छू तो मेरे शेर होते हैं शेर। अर्ज कर रिया हू—

न कभी अश्क वहारिये हैं, न शिकायत कर रिये हैं,
यह तो अपनी ही खता है कि मोहब्बत कर रिये हैं।

दिलवर वाह! वाह क्या खूब आप तो काफी धार पर मालूम पड रिये है खा—

अच्छनमिया क्या कह रिये हो मिया ?

दिलवर मेरा मतलव है मिया कि आप आजकल अच्छी शायरी कर रिये हैं माशा अल्लाह।

अच्छनमिया अरे जनाव वडे-वडे शायर मेरी शायरी का लोहा मान चुके हैं (धीरे से) किसी से कहियेगा नही। आजकल कोई शायर नही टिकरिया अपने सामने।

दिलवर ऐ लो मैं कह रिया हू खा लपेट लो खा लपेट लो आपने कभी दिलवर भोपाली को नही सुना है खा वरना ऐसा न कहते।

अच्छनमिया (बनते हुए) हा सुना है। बस खला मे छोटा मोटा तीर छोड लेते हैं।

दिलवर (गुस्से मे) क्या कहा जरा फिर तो कहिए खा।

अच्छनमिया भई ठीक ही कह रिया हू खा—खैर एक शेर अर्ज कर रिया हू—सुनिए—

दिलवर (चिल्ला कर गुस्से मे) मैं नही सुनरिया आप समझ क्या रिये हैं अपने आपको—आपने अभी मुझे सुना ही नही मतना है मैं कह रिया हू कि।

अच्छनमिया लेकिन आप नाराज क्यो होरिए हैं।

दिलवर हू नाराज क्यो होरिये हैं—अरे खा मुझे ही मिर्जा दिलवर भोपाली कहते ह सुना आपने मैं पूछ रिया हू कि आपने कितने दिन से शायरी शुरू की है—

मिया बेटे, मेरी उमर बीत गई है—शायरी करते करते।

अच्छनमिया लेकिन मेरी सुनिए तो बड़े मिया।

दिलवर क्या कहा बड़े मिया—मैं कह रिया हू तशरीफ ले जाइए उठिए दफा होजाइए, अरे मै कहरिया हू खा जारियो हो या—

अच्छनमिया (डर कर) जारिया हू। (जाते हुए) हाय हाय जिंदगी क्या कहरिए हो खा तुम भी। जख्म पै जख्म दिये जारियो हो।

बेगम (आते हुए) गुस्से मे) अये अये क्या हो गिया क्यो डकराये जारियो हो।

दिलवर (गुस्सा) हू बेहूदा कही का अपने आगे किसी को शायरी ही नही समझ रिया अच्छा हुआ चला गया।

बेगम आ हय तो वह भी शायर था कमबख्त। अच्छा हुआ चला गया।

होली का हुडदग फिल्मवालो के सग

[बाजार का दृश्य, गहमागहमी, आने-जाने वालो की भीड। स्वर उभरता है।]

स्वर फिल्मी दुनिया मे मचा होली का हुडदग पचरगी पिचकारिया तरह-तरह के रग असरानी ने राटकली साठ कटोरे भग लगा चीखने भीड मे सुदर के सग।

असरानी माताओ और पिताओ भाईयो और ाभियो बहनो और बहनो जीजाओ और सालियो घर वालो और वालियो

सुदर 'बीच मे ही' ये कुछ अधिक बोल रहा है, रग मे भग घोल रहा है। मैं बताता हू ये क्या कहना चाहता है।

असरानी तुम चुप रहो सुदर भाई मैं इनसे क्या कहूगा अगर कह सकता तो अपनी पत्नी को ही कुछ न कहता। बेकार ही तूने ये बात बोली।

सुदर माफ करना दोस्तो तकरार कुछ लम्बी हो गई दर-असल हम दोना ने मिलकर एक दुकान खोली है।

असरानी इसमे आप फिल्म हीरो और हीरोइनो छाप रग गुलाल और पिचकारिया पायेंगे।

सुदर हमारी दुकान से माल खरीदकर होली खेले तो आप भी फिल्मी हीरो हीरोइन बन जायेंगे।

असरानी और फिर जल्दी ही जनता के प्यारे हो जाते हैं।

सुदर अब बद करो यार ये राम कहानी जल्दी से सामान वेचो तुम्हे नही कम-से-कम मुझे तो अपने घर जाना है।

असरानी चल यार तू कहता है तो ऐसा ही सही हा तो मेहरबानो कँद्र दानो मैं आपको सामान दिखाऊ। यहा लेडीज फर्स्ट नही है आदमियो की बारी पहले।

सुदर अरे यार ये क्या बदतमीजी है।

असरानी क्यो क्या बात है?

सुदर भाई मेरे हर काम मे लेडीज फर्स्ट है यहा पीछे क्यू।

असरानी अरे यार कभी तो बेचारे मर्दो को आगे आने दो।

सुदर मैं नही मान सकता मैं बेचता हू सामान पहले देखिए साहिबाओ ये पिचकारिया आप देख रहे हैं तरह-तरह की अलग-अलग रगो की विभिन्न साइजो और डिजाइनो की इन सबके नाम फिल्मी हीरोइनो पर रखे गए हैं।

ये देखिए पद्मिनी कोल्हापुरे छाप पिचकारी इसके रगो के क्या कहने जिस पर भी पड जाए रग जमाती है कुआरो के ब्याह कराती है प्रिंस चार्ल्स पर इसी पिचकारी की बौछार हुई थी, ब्याह हो गया। कैसे भी हो इस पिचकारी का रग डालिए एक मिनट मे रोग रफूचक्कर, चाहे वो प्रेम रोग ही क्यो न हो?

असरानी और इस पिचकारी का इस्तेमाल जरा देख भाल कर करिए ये रेखा छापा है। इसमे सभी रग पक्के है। इसका रग जितेन्द्र शत्रुघ्न सिन्हा, विनोद मेहरा,

शर्म आती है मगर

संजय दत्त सभी पर पडा मगर टिका एक पर भी नही
पूव बौछार करिए और फिर वसी की वैसी ।

सुदर आपके प्रिय हीरो अमिताभ को ये ही पिचकारी बहुत पसद है । इसे वे सिलसिला मे जया पर भी आजमा चुके । ले जाइए फोरन ले जाइए ।

अमरानी अरे रे ये पिचकारी आप मत छोडिए ये रति अग्निहोत्री छाप पिचकारी है । इसका रग अदालतो मे चलता है । कोर्ट के सब बाबू इसी रग से होली खेलते हैं इसका रग जिस पर भी गिर जाता है वो इसाफ जरूर पाता है। मिथुन ने इसी पिचकारी से एक फिल्म मे होली खेली थी।

सुदर और साथियो क्रिकेट के खिलाडियो मे एक पिचकारी बहुत प्रसिद्ध है ये रीनाराय छाप पिचकारी है इसका रग अभी अभी पाकिस्तान के खिलाडी मोहसीन खान पर चढ चुका है वैसे इस पिचकारी को हमारे यहा के भी कई हीरो बहुत पसन्द करते थे ।

अमरानी मेरा ख्याल है हमारे पुरुष ग्राहको के चेहरे काफी लटक गए है अब इसकी बात करें जो लोग बूढे हो गए हैं
बैठे-बैठे बस मुह पर गुलाल मलने के काम के रह गए हैं । उनके लिए हमारे पास राजकपूर, अशोक कुमार ओ पी नय्यर छाप गुलाल है बस एक चुटकी भरिए चेहरे पर लगाइए और होली मनाइए ।

सुदर तुम तो बूढे से ही बात शुरू करते हो । नौजवान साथियो आपको उदास होने की जरूरत नही है आपके लिए भी हमारे पास रगो और तरह तरह की पिचकारियो का ढेर है ।

जो लोग अभी जवान हुए हैं उनके लिए सनी देव कुमार, गौरव कुणाल, सजय दत्त और मोनीश वहल छाप रगो के गुब्बारे हैं ये जहा फटगे वहा हगामा करेगे ही मजबूत रग छोडेंगे।

असरानी जितेन्द्र छाप रग आम आदमी के लिए बहुत ठीक है इस रग का इस्तेमाल करिए और इस बढते बुढापे मे भी कुवारियो के साथ इश्क का नाटक करिए ये रग बहुत चढता है। हेमामालिनी पर भी चढ गया था मगर धर्मेन्द्र छाप रग के सामने टिक न सका।

सुदर नौजवानो का रग अमिताभ छाप मार धाड करने वालो के लिए बिल्कुल फिट।
देश की भगनें और होजडे होली पर ये ही रग काम मे लेते हैं। अब तो ये रग गृहस्थियो के लिए भी ठीक है। असरानी ये ही रग काम मे लेता है।

असरानी (क्रोध मे) क्या कहा तुमने मैं ये रग क्यो काम मे लूगा क्या मेरा अपना रग नही है। समझ क्या रखा है।

सुदर अरे यार बिगडता क्यो है मैं तो।

असरानी 'बीच मे' नही तूने ये कैसे कहा मे तेरे दात निकाल दूगा।

[सगीत का शोर]

मजु *'जागते हुए' अरे ये क्या बात है* किसके दातो को शहीद किया जा रहा है। सुबह सुबह लगता है सपना देख रहे हो।

असरानी क्या सपना था। क्या मैं बाजार मे नही हू।

मजु जी नही आप बिस्तर मे हैं।

असरानी ओ हो लगता है रात कुछ ज्यादा भाग पी ली दोनो हसते हैं।

"एक मै और एक तू"

[कर्कश स्वर मे गाना उभरता है—का करू सजनी आये ना बालम गीत का स्वर बढता ही जाता है—राजेश आता है दरवाजा खटखटाता है—]

राजेश सुषमा-सुषमा,—दरवाजा खोलो, अरे भाई क्या हो गया तुम्हे ? (दरवाजा पीटता है) अरे कम-से कम अन्दर नही तो बाहर से तो मेरी आवाज सुन लिया करो आज मोर्चा किधर लगा दिया है । सुषमा अरे सुषमा (खीसता है) अरे क्या बहरी हो गई हो ।—मगर ऐसा भाग्य कहा है मेरा अरे खोलो दरवाजा—

सुषमा (पास आता स्वर) अरे आ तो रही हू आसमान सर पर क्यू उठा रखा है । क्या दरवाजा तोडने का ही इरादा है ।

राजेश (क्रोध मे) दरवाजा तो नही, हा अपना खुद का सर तोडने का जरूर इरादा है—मैं पूछता हू कि तुम क्या कर रही थी, क्या घोडे गधे बेचकर सो रही थी । तुम्हें इतना भी ध्यान नही रहता कि बाहर कोई गला फाड रहा है ।

सुषमा हाय मुझे तो सुनाई ही नही दिया ।

राजेश क्यो क्यो नही सुनाई दिया ऐसा कौन-सा जरूरी काम कर रही थी।

सुषमा (शरमाते हुए) गुस्सा मत करो जी, मैं तो गाना गा रही थी।

राजेश (और भी क्रोध मे नकल करते हुए) अहा हह ह गाना गा रही थी तो यू कहो ना कि खुद भी अन्दर अपना गला फाड रही थी।

सुषमा देखो जी, मेरे गाने के बारे मे ऐसी बात मत करना—मैं तो संगीत साधना का अभ्यास कर रही थी—

राजेश अरे रहने भी दो, सुषमा, कसम से अभ्यास तुम करती हो और प्यास—मुझे लगती है।

सुषमा तुम्हे क्या पता—मैं तो अभी आलाप कर रही थी।

राजेश आहा हहह—आलाप कर रही थी और मत किया करो।

सुषमा क्यो ?

राजेश अरे तुम्हारा ये आलाप सुनकर तो मुझे सुषमा विलाप आता है।

सुषमा तुम तो यू ही करते हो। मैं क्या इतना बुरा गाती हू—(इतराते हुए) लोग तो मुझे सुरो की रानी कहते हैं।

राजेश सुरो की रानी ? लोग तो मूख हैं—मुझे तो तुम असुरो की महारानी नजर आती हो।

सुषमा (उदासी से) तो-तो क्या मैं इतना बुरा गाती हू ?

राजेश नही-नही—तुम तो बहुत ही अच्छा गाती हो क्या कहने है तुम्हारे मधुर गले के मेरी बात छोडो—जरा बेचारे मोहल्ले वालो से तो पूछकर देखो ?

सुषमा (क्रोध मे) मोहल्ले वाले जाए भाड मैं तुम जाओ चूल्हे मे।

राजेश मैं तो बरसो से उसी मे झुलस रहा हू।

कम है।

सुषमा रहने को कैसे देते है, क्या फोक्ट मे रहने देते हैं किराया नही लेते क्या ?

राजेश अरे किराए से क्या होता है ये ही क्या कम वात है कि तुम्हारे जैसी कर्कश गले वाली औरत जो मेरी पत्नी है उसका गाना सुनकर भी मकान खाली करने को नही कहते।

सुषमा (रुआसे स्वर मे) हा-हा—ऐसी ही वात है। मेरे करम तो उसी दिन फूट गए थे। जव व्याह कर इस घर मे आई थी।

राजेश अरे तो मेरी कौन-सी दो करोड की लाटरी खुल गई ? मैं तो खुद उसी दिन से अपने पापो की सजा काट रहा हू।

सुषमा अरे जाओ भी भूल गए वे दिन ?

राजेश कौन से दिन ?

सुषमा वो ही दिन जव तुम्हारे पिताजी शादी के लिए मेरे पिताजी के पास चौखट पर अपनी नाक रगडने आए थे।

राजेश अरे रहने दो सुषमा हम इतने गए बीते नहीं हैं ऐसी बात नही है।

सुषमा तो कैसी वात है ?

राजेश तुम्हे मालूम नही है

सुषमा क्या मालूम नही है।

राजेश शादी की हकीकत।

सुषमा क्या हकीकत है वताओ.

राजेश अरे तुम्हारे पिताजी खुद अपनी चौखट लाए थे। मेरे पिताजी की नाक रगडवाने के लिए।

सुषमा राजेश, तुम्हे तो शुक्र गुजार होना चाहिए।

सुपमा वकवास छोडो—तुम तो ये वताओ कि जव मैं गाना शुरू करता हू तो तुम घर के वाहर क्यो चले जाते हो।
राजेश तो क्या अन्दर रहकर घुट कर मर जाऊ।
सुपमा क्यो, क्या ऐसा दम घुटता है मेरे गले से दो घडी वठ नही सकते।
राजेश नही वैठ सकता सुपमा वाहर जाना ही पडता है।
सुपमा क्यो—आखिर क्यो चले जाते हो वाहर।
राजेश सच वता दू सुपमा।
सुपमा कभी आज तक तो वताया नही।
राजेश मगर आज सच कह दूगा।
सुपमा अरे तो कहोगे भी या यू ही वात को खाल की तरह खीचोगे।
राजेश सुपमा, भगवान की कसम आज मैं सच कह ही दूगा।
सुपमा ओफो अव वको भी।
राजेश सुपमा दर असल वात ये है कि जव तुम गाना शुरू करती हो तो मैं घर के वाहर जा के इसलिए खडा हो जाता हू।
सुपमा किसलिए ?
राजेश इसलिए वाहर जाकर खडा हो जाता हू ताकि पडौसी ये न समझें कि मैं तुम्हे पीट रहा हू—
सुपमा तो-तो—क्या मैं इतना बुरा गाती हू।
राजेश अरे नही सुपमा, तुम तो वेहद अच्छा गाती हो, मधुर स्वर लहर वहाती हो ? अरे मैं कहता हू ये तो शरीफ हैं वेचारे हमारे पडौसी।
सुपमा (क्रोध मे) क्यो, इसमे शराफत को कौन-सी वात है ? क्यो पडौसी हमे खाने को देते हैं ?
राजेश खाने को तो नही देते मगर रहने को देते हैं ये ही क्या

कम है।

सुषमा रहने को कैसे देते हैं, क्या फोकट मे रहने देते हैं किराया नही लेते क्या ?

राजेश अरे किराए से क्या होता है ये ही क्या कम बात है कि तुम्हारे जैसी कर्कश गले वाली औरत जो मेरी पत्नी है उसका गाना सुनकर भी मकान खाली करने को नही कहते।

सुषमा (रुआंसे स्वर मे) हा-हा—ऐसी ही बात है। मेरे करम तो उसी दिन फूट गए थे। जब ब्याह कर इस घर मे आई थी।

राजेश अरे तो मेरी कौन-सी दो करोड की लाटरी खुल गई ? मैं तो खुद उसी दिन से अपने पापो की सजा काट रहा हू।

सुषमा अरे जाओ भी भूल गए थे दिन ?

राजेश कौन से दिन ?

सुषमा वो ही दिन जब तुम्हारे पिताजी शादी के लिए मेरे पिताजी के पास चौखट पर अपनी नाक रगडने आए थे।

राजेश अरे रहने दो सुषमा हम इतने गए बीते नहीं हैं ऐसी बात नहीं है।

सुषमा तो कसी बात है ?

राजेश तुम्हे मालूम नही है

सुषमा क्या मालूम नही है।

राजेश शादी की हकीकत।

सुषमा क्या हकीकत है बताओ।

राजेश अरे तुम्हारे पिताजी खुद अपनी चौखट लाए थे। मेरे पिताजी की नाक रगडवाने के लिए।

सुषमा राजेश, तुम्हे तो शुक्र गुजार होना चाहिए।

राजेश किस बात के लिए ?
सुषमा कि इतनी, सुन्दर, सुशील, आदर्श ग्रहिणी मिली है।
राजेश बाईदीवे ये विशेषण किसके लिए इस्तेमाल किए तुमने।
सुषमा ये बातें, अपने बारे में जरा सोचो अगर मैं किसी और की पत्नी होती तो।
राजेश अरे काश ऐसा होता सुषमा—काश—।
लेकिन तुम्हें तो मैं ही भुगत रहा हूं मैं इतना स्वार्थी नहीं कि किसी और का बुरा चाहूं।
सुषमा तुम अपने आपको आखिर समझते क्या हो ? कभी खुद पर भी नजर डाली है। तुम कौन से दूध के धुले हुए हो।
राजेश अरे तो तुम कौन-सी दानेदार चीनी-सी धुली हुई हो। एक भी खराबी हो मुझमें तो बताओ ? तुम तो हमेशा बुद्धुओं और बेवकूफों की-सी बात करती हो।
सुषमा तो और कैसी बातें करूं। तुम्हें समझाने के लिए तो ऐसी ही बातें करूंगी।
राजेश चलो मान लिया कि तुम मुझे बेवकूफ समझती हो, हर पत्नी समझती है अपने पति को। लेकिन अभी इस बात का फैसला कर लेते हैं मान लो भगवान तुम्हें अक्लमंदी और खूबसूरती में से एक चीज देना चाहे तो तुम क्या लेना पसन्द करोगी—
सुषमा (सोचते हुए)—मैं तो अक्लमंदी पसंद करूंगी।
राजेश बस हो गया फैसला।
सुषमा कैसे।
राजेश अरे भाई जिसके पास जो चीज नहीं होती वो ही तो लेना चाहेगा।
सुषमा (रोकर चीख कर) अच्छा ये बात है ? तुम तो सदा ऐसी ही बकवास करते हो। तुमने मेरी बात आज तक

कभी मानी है। क्या तुम्हारे और मेरे विचार कभी आपस मे मिले है क्या ?

राजेश हा हा अवश्य मिले है।

सुषमा कब मिले हैं ?

राजेश तुम्हारी याद पर तो पत्थर पड गए हैं तुम्हे तो कुछ भी याद नही रहता। तुम मुझे भी कुछ दिनो के लिए भूल जाओ ना।

सुषमा बात को बदलो मत तुम तो ये बताओ तुम्हारे और मेरे विचार आपस मे कब मिले।

राजेश बताता हू, तुम अपने भेजे पर जमी मिट्टी की परतो को कुरेदो—तुम्हे याद है हमारे घर मे एक बार आग लगी थी।

सुषमा हा लगी थी। उससे क्या लेना-देना अब।

राजेश तुम्हे याद आ गया ना कि हमारे घर मे आग लगी थी।

सुषमा अरे तो फिर क्या हुआ था ?

राजेश तो उस वक्त क्या हम एक ही दरवाजे से भाग कर बाहर नही गए थे।

सुषमा तो क्या इसे तुम विचारो का मिलना कहते हो।

राजेश नहीं-नही ये तो दिलो का मधुर मिलन है। (घबरा कर) अरे—ये धुआ कैसा उठ रहा है—क्या हो गया ये।

सुषमा हाय राम मैं तो स्टोव पर दाल चढा कर सगीत साधना करने बैठ गई थी।

राजेश लगता है—आग लग गई है—धुआ तेज होता जा रहा है।

सुषमा हाये अब क्या करें—जल्दी फायर बिग्रेड को बुलाओ। हाये सब खाक हो जाएगा।

राजेश अरे रोओ मत सुषमा रानी हो तो गाने से भी बुरी लगती हो। आज तो हमारे लिए सौभाग्यशाली दिन है।

सुषमा कैसे।

राजेश आज हमारे विचार फिर मिल गए—आओ हम एक ही दरवाजे से फिर भाग चलते है—

फिल्म चमचाराम का रेडियो प्रोग्राम

उदघोषणा (बहुत ही रोमानी अदाज मे) ये पाताल वाणी का गडबड केन्द्र है। अब आप सुनेंगे फिल्म चमचाराम का स्पोन्सर्ड प्रोग्राम (सगीत का उभरना और फिर बहुत ही भारी आवाज मे एक शेर का गूजना—

उस बॉस की कुर्सी को कोई छू नही सकता
जिस बॉस की कुर्सी का निगहबान है चमचा

शेर धीरे-धीरे फेड आउट होना है। अमीन सयानी माइक पर आ जाते हैं।)

अमीन बहनो और भाइयो! फिल्मी दुनिया के इतिहास मे एक और तहलका एक और म्युजीकल धमाका। चमचा राम चमचाराम

[तबस्सुम का स्वर उभरता है।]

तबस्सुम चमचाराम कहानी है हमारे आज के समाज की मुसीबतजदा बेरोजगारो की—डूलायमान कुर्सी मे अफसरो की और कुछ बेबस बेसहारा चमचा और चमचियो की।

[तबस्सुम की आवाज कम होती है, और

वीरकुमार की आवाज में टाइटल सोंग शुरू होना है।]

गीत मै हू चमचा राम मैं हू चमचाराम
जिसको मैं न कर सकू कौन-सा है काम।
मैं हू चमचाराम
मेरे दम से अफसरो की कुर्सिया जमे।
कौन है जो जानता नही यहा हमे।
अच्छे-अच्छे करते हैं मुझे सलाम।
मैं हू चमचाराम ।

[गाने को सुपर इम्पोज करती हुई तबस्सुम की आवाज उभरती है]

तबस्सुम चमचाराम का अफसाना भीड भरी सडको से शुरू होकर राजमहलो के अन्दर तक जाता है। कुटिया से लेकर चकाचौध कर देने वाले बगलो तक इसकी खूब हलचल है।

अमीन चमचाराम की कहानी लिखी है ऊटपटाग छोलापुरी ने, सवाद धोखेश्वर के हैं और सगीत की दुनिया मे नया हगामा पेश करने वाले हैं सगीतकार गोरेलाल धोरेलाल।

[गाना शुरू होता है।]

हीरोइन आजारे आजारे मेरे चमचेराजा
अब तो काम बना जा रे।
ओ ओ चमचे ।

हीरो आजारे आजारे मेरी चमची रानी
बॉस को मूर्ख बना जा रे
ओ ओ चमची ।

अमीन चमचाराम के दिलकश गीतो को सुनकर आप झूम उठेंगे। इसकी तोडदार मोडदार कहानी पर आप बरसो सोचते रहेंगे। इसके लच्छेदार गुच्छेदार सवाद आप महीनो गुदगुदाते रहेंगे। इसके उभरते हुए गीतकार गुलकन्द खत्री और प्रोड्यूसर हैं पोपट चन्द चौपट चन्द।

तबस्सुम इस सतरगी फिल्म के चमकते सितारे हैं मियां फलाप अच्छन, छछुन्दर पौसा मागीनी ठगेश्वरी डुवाना लाजमी और एक खास भूमिका मे आ रहे हैं विलेन थप्पडतान।

अमीन चमचाराम गरीबो की गुदडी है।

तबस्सुम अधो की आखें और लगडा की लकडी है।

अमीन बेरोजगारी का रोजगार है।

[गीत उभरता है]

गीत ओ चमचाराम मेरा काम तुम करा देना।
मिले कही भी कोई काम तो दिला देना
मैं एम॰ ए॰ पास हू तुम ये भी मानते ही हो
मुझे स्वीकार है तुम प्योन ही बना देना।

अमीन और फिर कहानी मे अचानक जबर्दस्त मोड आ जाता है। मुकाबले के हालात पैदा हो जाते हैं। चमचो की भयानक टक्कर शुरू हो जाती है। [illegible] भयानक मजर देखकर आप दहल जायेंगे। [illegible] नए स्टाइल की मिडन्त नए ढग से बनाया [illegible] होता है।

तबस्सुम फिर क्या होता है, कौन-सा [illegible] [illegible] अजाम जानने के लिए देखिए [illegible]

[illegible] आती है

पौपट चन्द, चौपट चन्द का न भूलने वाला कार-
नामा चमचाराम।

अमीन फिल्म चमचाराम अपनी तरह की बस एक ही
फिल्म है जो आपके तन-मन को गुदगुदा देगी,
दिमाग की नसें हिला देगी, जिसे आप बार बार
देखना चाहेंगे, जिसके गीत आप हजार बार गुन-
गुनाएंगे। सुरीली आवाज देने वाले कलाकार हैं
भनोद निराशा, धोखेश आडेकर और उभरते हुए
हीरो गायक मिया अच्छन फलाप अच्छन।
[गीत उभरता है।]
कुछ काम बनाना है तो बस चमचो से मिल लो
अफसर को पटाना है तो बस चमचो से मिल लो
कुछ काम कराया न करो मुफ्त की खाओ
कुर्सी का जमाना है तो बस चमचो से मिल लो

अमीन चमचाराम का सुरीला सगीत सुनकर आप नाचेंगे,
मैं एक बेहतरीन शाहकार हूं।

तबस्सुम चमचा राम बहुत बडा फनकार है इस जमाने का।

अमीन चमचाराम फिल्म इस जमाने की सही तस्वीर पेश
करती है। जल्दी ही हर गाव, शहर और कस्बे मे
धूम मचाने आ रहा है चमचाराम

तबस्सुम चूकिये मत आज ही अपनी एडवास बुकिंग करा
लीजिए। अपने दोस्तो और परिवार के सदस्यो के
साथ देखिए। आपसे मुलाकात के लिए आ रहा
है चमचाराम।

अमीन चमचा राम वो ही जो अफसर मन भाये के बाद
एक और हगामी पेशकश चमचाराम
चमचाराम।

[टाइटल सौंग उभरता है।]
मैं हू चमचाराम मैं हू चमचाराम
[गाना फेड आउट हो जाता है।]

उदघोषणा अभी आप सुन रहे थे चमचाराम का रेडियो प्रोग्राम

मिया-बीवी और वो

कितना पुराना घिसापिटा और दकियानूसी मुहावरा इस्तेमाल किया जाता है बेचारे काजी के लिए। वैसे वो खुद इस मुहावरे से भी पुराने घिसेपिटे और दकियानूसी लगते है। आपने भी सुना होगा—क्या करेगा काजी ? आज के इस आधुनिक जमाने में जिन लोगो ने कोर्ट मे शादी की है उनका तो इस नाम की चीज से वास्ता ही नही पडता। अब हमे ये तो मालूम नही कि वो लोग भी खुश है या नही। कहा तो ये जाता है, 'मिया बीबी राजी तो क्या करेगा काजी', लेकिन मैं ये मानने को बिल्कुल तैयार नही हू। मुझे इस मुहावरे मे ही बुनियादी खामिया दिखाई देती है। देखा जाए तो इसका वो पहला हिस्सा तो विश्वास के लायक ही नही है। आप ही बताइए वो मिया बीबी क्या जो राजी हो। जब तक तूम-लडाका और धम-धडाका न हो जिन्दगी कितनी बेमजा होती है। पता ही ,

कर दे। वन संरक्षण की तरह उनकी नस्लों का भी संरक्षण किया जाए। उनके मरने के बाद भी उनकी आदमकद प्रतिमाएं नगरों के प्रमुख चौराहों पर रखवा दिये जाएं ताकि शादी के प्रति और लोगों के विचारों में भी परिवर्तन आ सके। उनका हौसला बढ़े। ये जो शादी के नाम पर तूफान खड़ा हो जाता है वो रफा-दफा हो। माफ करना जरा मैं विषय से अलग हट गया था, फिर से पटरी पर आता हूं। बात मियां बीवी के आपसी प्रेम की हो रही थी। काजी तक पहुंचने में तो काफी समय लगेगा। मुझे तो हैरत मियां बीवी के राजी होने पर भी, और आज तक है होगा रहेगी। भला शेरनी के साथ कभी बकरे की जिन्दगी आराम से कट सकती है? मगर चलिए हम इस मुहावरे की बैसाखी पकड़ कर कुछ और तथ्यों के लिए आगे बढ़ते हैं। अब जरा आप ही सोचिए, अगर मियां-बीवी राजी भी हैं तो इसमें दाल-भात में मूसलचंद की तरह काजी क्यों टपके। ये पूछना आज मैं भी गुस्ताखी है। लेकिन मैं तो जरा और गहराई से मामलात को देखना चाह रहा हूं कि अगर राजी मियां-बीवी के बीच काजी जी आएं तो उनकी क्या हालत हो। मेरे ख्याल से उन्हें वैसे ही दोनों की लातें खिलाई जानी चाहिए, इस बात पर कि उन्होंने ही उन्हें मियां-बीवी बनने का गौरव दिया है। ये बात अलग है कि आपके लिखे प्रेमपत्रों ने भी इसमें महत्वपूर्ण रोल अदा किया है। वैसे समाज के सामने तो ये काम काजी ने ही अंजाम दिया है और अगर दोनों की लातें न खिला सकें तो आप काजी जी पर गुजरने वाली मुसीबत का स्वयं अनुमान लगा सकते हैं। अगर दोनों नाराज हो गए तो काजी जी का घर में घुसना तो दूर उनकी सूरत दूर से देखना गवारा न करें।

मिया-बीवी और वो

कितना पुराना घिसापिटा और दकियानूसी मुहावरा इस्तेमाल किया जाता है बेचारे काजी के लिए। वैसे वो खुद इस मुहावरे से भी पुराने घिसेपिटे और दकियानूसी लगते है। आपने भी सुना होगा—क्या करेगा काजी ? आज के इस आधुनिक जमाने मे जिन लोगो ने कोर्ट मे शादी की है उनका तो इस नाम की चीज से वास्ता ही नही पडता। अब हमे ये तो मालूम नही कि वो लोग भी खुश हैं या नही। कहा तो ये जाता है, 'मिया बीवी राजी तो क्या करेगा काजी', लेकिन मैं ये मानने को बिलकुल तैयार नही हू। मुझे इस मुहावरे मे ही बुनियादी गलतिया दिखाई देती हैं। देखा जाए तो इसका वो पहला हिस्सा तो विश्वास के लायक ही नही है। आप ही बताइए वो मिया बीवी क्या जो राजी हो। जब तक तूम-तडाका और धूम-धडाका न हो जिन्दगी कितनी बेमजा होती है। पता ही नही लगता कि ये पति-पत्नी हैं। आपके बहुत दबाव डालने पर चलो एक प्रतिशत मान भी लें कि कही पर वाइफ और हसबैंड राजी हैं तो ऐसे जोडे को तो मैं देखना चाहूगा चाहे कुछ भी खर्च हो जाए। वो तो एक दर्शनीय और ऐतिहासिक जोडा होगा। सरकार को चाहिए कि ऐसे जोडे को तो राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित

कर दे। वन सरक्षण की तरह उनकी नस्लो का भी सरक्षण किया जाए। उनके मरने के बाद भी उनकी आदमकद प्रतिमाए नगरों के प्रमुख चौराहो पर रखवा देनी चाहिए ताकि शादी के प्रति और लोगो के विचारो मे भी परिवर्तन आ सके। उनका हौसला बढे। ये जो शादी के नाम पर तूफान खडा हो जाता है ये रफा-दफा है। माफ करना जरा मैं विषय से अलग हट गया था, फिर से पटरी पर आता हू। बात मिया-बीवी के आसपास घूम रही थी। काजी तक पहुचने मे तो काफी समय लगेगा। मुझे तो हैरत मिया-बीवी के राजी होने पर थी, और आज तक है हमेशा रहेगी। भला शेरनी के साथ कभी बकरे की जिन्दगी आराम से कट सकती है? मगर चलिए हम इस मुहावरे की बैसाखी पकड कर कुछ और तथ्यो के लिए आगे बढते हैं। अब जरा आप ही सोचिए, अगर मिया-बीवी राजी भी हैं तो इसमे दाल-भात मे मूसरचद की तरह काजी क्यो टपके। ये उनकी शान मे भी गुस्ताखी है। लेकिन मैं तो जरा और गहराई से सोचकर ये देखना चाह रहा हू कि अगर राजी मिया-बीवी के बीच काजी जी आए तो उनकी क्या हालत हो। मेरे ख्याल से उसे देखते ही दोनो की बाछें खिल जानी चाहिए, इस बात पर कि उसने ही उन्हे मिया-बीवी बनने का गौरव दिया है। ये बात अलग है कि आपके लिखे प्रेम-पत्रो ने भी इसमे महत्त्वपूर्ण रोल अदा किया है। वैसे समाज के सामने तो ये काम काजी ने ही अजाम दिया है और अगर दोनो की बाछें न खिलें तो आप काजी जी पर गुजरने वाली मुसीबत का स्वय अनुभव लगा सकते हैं। अगर वो वाकई राजी हुए तो काजी जी का घर मे घुसना तो दूर उनकी सूरत दूर तक से देखना गवारा न करें।

अब इसी मुहावरे मे से एक और सवाल [illegible] ही जैसे कभी-कभी महबूबा [illegible]

अपने दिमाग पर जोर डालकर देखिए, अगर मिया-बीवी राजी हैं तो उस वक्त वास्तव मे काजी क्या करेगा ? मगर मैं ये पूछता, मिया बीवी राजी हैं तो भी काजी क्या कर लेगा ? कुछ कर सकेगा ? मेरा भी ख्याल है काजी का ऐसी जगह जाना ही नही चाहिए जहा मिया-बीवी राजी हैं क्योकि वहा जाने पर तो खतरा ही खतरा है और फिर समझदार को ऐसा इशारा काफी होता है। अगर काजी समझदार है तो ऐसे जोडे से तो भूलकर भी मुलाकात नही करेगा। मेरी नेक सलाह तो ये है कि अगर काजी साहब अपनी खुद की बीवी से भी राजी न हो तो भी किसी ऐसी जगह न जाए जहा मिया-बीवियो के बीच काजी जी दातो मे जीभ की तरह फस जाए और कही जान पर न बन जाए। अगर मिया-बीवी के झगडे के बीच काजी जी आ जाए तो वो लोग अपना झगडा बन्द करके पहले काजी जी पर ही टूट पडें, क्योकि आखिर इस सारे झगडे की जड तो वो ही हैं। दिल की बर्बादी का मजर नजर के सामने हो तो भला किस आदमी को गुस्सा नही आएगा और खास तौर से उसे तो बहुत ही आएगा जो बीवी के झगडो से तग आ गया हो। इसीलिए काजी जी वहा पर कुछ भी नही करते जहा मिया-बीवी राजी नही। कई बार काजी जी को दुबलेपन की बीमारी अवश्य हो जाती है। लेकिन ये तो उनका पर्सनल मामला है। लोग समझते हैं कि शहर के दुख से होता है जब कि उन्हें शहर का रत्ती-भर भी गम नही होता है। जब कि उन्हें वसे खोजबीन के बाद इस मुहावरे म सच्चाई का कुछ अश जरूर नजर आता है।

लगता है किसी नौजवान दिल जले पति ने अपनी पत्नी से तग आकर काजी साहब को परेशान किया होगा। अपनी दाढी नुचवाना काफी तकलीफदेह काम है। आपको विश्वास न होता हो तो नुचवाकर देखिए। लेकिन दाढी होगी ही नही तो क्या

नुचवाएंगे सिवाय खम्भे नोचने के। फिर कुछ नही किया जा सकता। इतना तो हम कह सकते हैं कि इन मुहावरों से काजी किस्म के जीव का सम्पूर्ण इतिहास उजागर हो जाता है। कभी-कभी सोचता हूं अगर काजी नही होता तो क्या दुनिया में सब कुंवारे ही रह जाते? नही साहब नही। ये हादसा तो फिर भी होता जिसे लोग शादी के नाम से पुकारते हैं। काजी तो मुफ्त मे बदनाम है। मगर करे भी क्या अब का काजी!

होली पर टी० वी०

[स्क्रीन पर एक छवि बहुत ही मजबूर मुस्कान के साथ उभरती है।]

हमारे सभी दर्शकों, प्रदर्शकों, प्रशसकों, विध्वसकों को दूरदर्शन का दूर से—रग भरा, भग भरा, उमग भरा, प्यार भरा, खुमार भरा, मनुहार भरा नमस्कार। आज से हम अपने कार्यक्रमों में कुछ नए सडियल, क्षमा कीजिए नए सीरियल आरभ कर रहे हैं। उम्मीद है आप उन्हें भी इसी मधुर भावना के साथ सहेंगे, जिस तरह आज तक के कार्यक्रमों को सहा है, और अपनी मीठी जुबान से कुछ नही कहा है। कहने से होगा भी क्या ? हम आपकी मनोकामना कभी जानेंगे नही, और आप जो कहेंगे उसे मानेंगे नही।

प्रिय दर्शकों, हमें मालूम है, आप हमारे किसी कार्यक्रम को मिस नही करते, हालांकि हमारा प्रेमी अपनी प्रेमिका को, मित्र अपने दोस्तों को, सहेलियां अपनी सखियों को, बीवियां अपने पतियों को अवश्य मिस कर रही हैं। जब हम बोलते हैं, तो कोई किसी की नही सुनता। हमारे कारण बच्चे अपनी परीक्षाओं और अध्यापकों का ही नही, अपने मा-बाप तक को भूल गये हैं।

तो, साथियो, इसी आशा और विश्वास के साथ कुछ नए प्रोग्राम हम होली के इस हुडदगे हगामी त्योहार से शुरु करते हैं जो आप देखेंगे यानी आपको देखना ही पडेगा।

आइये, सबसे पहले आपको रविवारीय कार्यक्रमो की झलक दिखायें। ये ही वो दिन है जिसमे आप पूरी तरह अपने घर मे होते हैं और उसे पूरी तरह बर्बाद करने का बीडा हमने अधिकार समझकर उठाया है। हमे विश्वास है, आप पूरी तरह सुबह से शाम तक हमारे कार्यक्रमो मे इस तरह उलझे रहेंगे कि बीमार दोस्त को अस्पताल मे देखने तक नही जा सकेंगे, और वो आपके दर्शन के बिना दूरदर्शन की मेहरबानी से दम तोड देगा।

एक बहुत ही रोचक, रोमाचक कार्यक्रम हम आपको दिखायेंगे, 'सजनी' यानी पत्नी पति से तनी हुई और उससे चिर-पीडित पति की ये घर-घर की कहानी आपको हसाते-हसाते ही लोट-पोट नही कर देगी, बल्कि रुलाते-रुलाते भी आपका दम घोट देगी। इसका टाइटल सौंग होगा—मैं तो तुम सग ब्याह रचाकर हार गया सजनी। मुझको है बच्चो का सदमा, मार गया सजनी।

मोहल्ले-भर के लुच्चे-लफगे बदमाशो के सेवाभावी जीवन पर आधारित होगा कार्यक्रम 'टुक्कड'। रोटी के टुकडो पर कुत्तो की तरह लडते और टुकडा मिल जाने पर दुम हिलाने वालो की कहानी का साकार चित्रण होगा टुक्कड समाज का सच्चा दर्पण होगा—'टुक्कड'।

महिलाए हमारे समाज की शोभा हैं, घर-आगन की लक्ष्मी हैं, राष्ट्र की प्रगति के लिए पुरुष से कधे से कधा मिलाकर चल रही हैं। ये चाहे तो समाज को एक पल मे बदल सकती हैं लेकिन इनका अधिकतर समय दूसरो की निन्दा करने मे और बराबर गली-पडोसन से झगडने मे चला जाता है। इनकी प्रतिभा का सही

उपयोग हो इसके लिए कर्मशील बहनें अपना कार्यक्रम देंगेगी नारी दगल।

हमारे देश मे हर तीसरा आदमी पान खाता है, हर दूसरा आदमी पिच-पिच पिचकारी थूकता है, हर चौथा आदमी चूना लगाता है, गरज ये कि पान की अलग तहजीब संस्कृति, इतिहास और आचार-विचार हैं। कत्था, चूना, जर्दा, मसाला सबकी अलग-अलग डिबियाओ से मिलकर बनता है एक पानदान। यानी अपना हिन्दुस्तान राष्ट्रीय एकता की माला में गुथा कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे हम 'पानदान'।

दर्शको, हमारे यहा कितने ही ऐसे लोग है जो न तो तोलते हैं न सतोलते है, बस अचानक ही अपनी जुबान खोलते है और बोलते है, सिर्फ बोलते हैं। जब वो बोलते हैं तो किसी की नही सुनते हैं और सामने वाले बेजारी से अपना सर धुनते है। दूर दर्शन लोगो का भी प्रतिनिधित्व करना है जो बात मे से बात निकालकर उसे शतान की आत बना देते हैं और बिना ही बात बिना रुके बोले चले जाते है। मनोरजन और हसी-मजाक से भरपूर एक ऐसा ही कार्यक्रम हम आपको दिखाएगे जिसके 13 भाग पूरे हो जाने तक भी आप ये नही समझ पायेंगे कि ये क्या बात है, ये सब किस बात पर कहा जा रहा है। ये होगा हमारा नया सीरियल 'बात के बात'।

कई बार आपने देखा होगा, कुछ लोग आते हैं तो ये भूल जाते हैं कि उन्हे वापस जाना भी है यानी जहा पर आए वही जीवन की अतिम सास लेने का इरादा करके जम गए। हमारे कई सीरियल भी ऐसे ही जम जाते हैं। हम समझते हैं कि कार्यक्रम जम रहे हैं यानी श्रोताओ का मन बहला रहे हैं, लेकिन होता है ठीक विपरीत श्रोता दर्शक दरअसल मन नही बहला रहे होते हैं बल्कि दिमाग मे आये गुस्से को किसी बहाने टहला रहे होते हैं। हमने ऐसे लोगो

के जीवन और आदतों पर आधारित एक नया धारावाहिक आरंभ किया है जैसे कहावत है ना—यम आता है तो वापस नहीं जाता है वैसे ही ये लोग भी नहीं जाते हैं। हमारा ये नया सीरियल होगा 'यम लोक'।

बच्चे हमारे राष्ट्र के महकते मुस्कुराते फूल हैं, इनकी आंखों में देश का भविष्य झिलमिलाता है। हमने इनको बचपन में ही भरपूर जवान बनाने के लिए अनेकों कार्यक्रम विज्ञापनों के साथ प्रसारित किये हैं। जो वयस्क फिल्में या विज्ञापन बच्चे सिनेमा हॉल में जाकर नहीं देख सकते थे उनका पूरा आनन्द घर पर रजाई में बैठकर अपने माता-पिता के साथ ले सकते हैं। ऐसी सुखद और आनंदमयी स्थितियां पैदा करने का श्रेय दूरदर्शन को ही है। ज्ञान की असीम वृद्धि का कार्यक्रम हम बच्चों के लिए प्रसारित करते हैं 'ज्ञान-अज्ञान'।

प्रिय दर्शको, समय की कमी के कारण हम आपको पूरे कार्यक्रमों की झलक तो नहीं दिखला पा रहे हैं, लेकिन आपको इतना अवश्य बता दें कि जो कार्यक्रम हम आज से शुरू करने जा रहे हैं उनमें आपके ज्ञान में तो वृद्धि होगी ही साथ ही-साथ आप इनकी सहायता से इक्कीसवीं शताब्दी में भी आसानी से प्रवेश पा जायेंगे।

अच्छा साथियो, चलते हैं, फिर आते रहेंगे आपको बोर करने के लिए, शोर करने के लिए, कुछ-न-कुछ और करने के लिए। होली के इस रंगीले-सजीले पर्व पर हमारी ओर से सभी को रंगों भरा राम-राम और सलाम।

[संगीत विज्ञापन आरंभ]

तलाश एक जीवनसाथी की

मीना तेरी सूरत से नही मिलती किसी और की सूरत (गुनगुनाती है)।

उर्मिला हाय मीना! आज ये किसकी तसवीर पे ताना-कशी हो रही है?

मीना अरे! आओ उर्मिल, आज किधर रास्ता भूल गई?

उर्मिला रास्ता नही भूली, जान-बूझकर आई हू, मुझे तेरे घर ही आना था आज।

मीना ये तो अच्छा किया। अरे, बैठ तो सही।

उर्मिला बैठ तो जाएगे यार, पहले ये तो बता, अभी किसका फोटो हाथ मे लेकर गा रही थी? क्या कोई चढ गया है नजर मे? मुबारक हो।

मीना नही, ये बात नही है उर्मिला। मुझे अभी तक तो कोई लडका पसद ही नही आया और तुझे मालूम है मैं शादी करूगी तो अपनी खुद की पसद से।

उर्मिला वरना क्या करेगी?

मीना जिदगी भर ही कुवारी रह जाऊगी। कभी शादी करूगी ही नही, समझो?

उर्मिला बडा ही मुश्किल काम है मीना यह। तुम जानती

हो लडकी की जिंदगी कितनी मुश्किलो वाली होती है ? और वह भी एक कुवारी लडकी की।

मीना वो सब ठीक है उर्मिला, मगर मैं क्या करू, मुझे कोई जचता ही नही।

उर्मिला अच्छा, वो जो फोटो अभी तुम देख रही थी, उसमे क्या खराबी है ?

मीना अरे, वो भी कोई लडका है ? लगता है भगवान ने शनिवार के दिन बनाया है। और, तुम्हे मालूम है, सप्ताह के आखिरी दिन कोई भी मन लगाकर काम नही करता। या फिर शायद उसे ठेके पर बनवाया गया है। एकदम बोडम।

उर्मिला वो तो खैर ठीक है, मगर वो फोटो मुझे भी तो दिखा, मुझे भी तो पता चले कुछ।

मीना अच्छा बाबा, ले। तू भी देख। देख जरा आख देख, खास चमगादड की सी लगती है। और सर, जैसे तरबूज। गला तो छिपकली की दुम लगता है। मैं कहती हू उर्मिला, भगवान की सबसे विचित्र रचना है ये लडका। नही मुझे तो कोई

उर्मिला अच्छा, तभी तुम गा रही थी, तेरी सूरत से नही मिलती किसी की सूरत

मीना बिल्कुल यही बात है। मैंने तो ऐसी शक्ल अपने जीवन मे दूसरी नही देखी। बाइ गॉड, अगर मोहल्ले के बच्चे देख लें तो डरकर भाग जाए।

उर्मिला लेकिन मीना, जरा सोच तो सही, लोग उगलिया उठाते हैं। बातें बनाते हैं।

मीना तो क्या करू ? किसी बदर को गले से बाध लू ? किसी गधे की दुम पकड लू ? किसी क्रेक के पल्ले

से वाघ लू, किसी घोचू के साथ फेरे पड लू ?

उर्मिला नही, नही, ऐसा करने के लिए तुम्हे कौन कह रहा है ? कौन कहता है कि तुम किसी जानवर को पल्ले से वाघो ? अभी तो ससार मे आदमो के वच्चे ही बहुत मिल जाएगे। दुनिया मे इसान बनाने की फक्टरिया वद थाडे ही हो गई। कई मिल जाएगे।

नौकर भोलू मेम साव ! मेम साव ! तैयार हैं मेम साव !

मीना क्या है ? क्या वक-वक लगा रखी है ? क्या तैयार हैं ?

भोलू वो सारा इतजाम हो गया है। कमरा भी ठीक कर दिया है, मेम साव।

मीना अच्छा किया। अव सर मत खा।

भोलू मेम साव, अव मैं तनिक वीडी ले आऊ ! ससुरी वीडी की लत ही कुछ ऐसी है।

मीना हा, हा, जाओ, मगर जरा जल्दी वापस आना।

भोलू वस अभी आया मेम साव। वस समझिए चट गया और पट आया।

उर्मिला क्यू मीना, ये क्या चक्कर है ? कमरा ठीक हो गया ? सव इतजाम हो गया ? ये क्या है ? ये सव क्या चक्कर है ?

मीना अरे हा, मैं ये तो तुम्हे वताना ही भूल गई। आज कुछ इटरव्यूज लेने हैं। तुम अच्छे समय पर आईं।

उर्मिला इटरव्यूज ? किसके इटरव्यूज कैसे इटरव्यूज ?

मीना वात ये है, मैंने अखवार मे अपने लिए शादी का विज्ञापन दिया था। आज वो ही उम्मीदवार इटर-व्यू के लिए आने वाले हैं।

उर्मिला अच्छा, तो ये चक्कर है कि मेम साव तैयारियो मे

लगी हैं।

मीना हा, उर्मिला। बड़ा अच्छा रहेगा हम दोनो मिलकर इंटरव्यू लेंगे। और ऐसे सवाल करेंगे कि बच्चो को छठी का दूध याद आ जाएगा। अच्छा तो पहले तुझे चाय पिला दें फिर इंटरव्यू लेंगे।

[दृश्य परिवर्तन पहला उम्मीदवार आता है]

मीना आपका नाम ? (पहले उम्मीदवार से)

लडका जी। (हकलाना)

मीना मैंने आपका नाम पूछा है। मोनो एक्टिंग नही कराई है।

लडका जी वो वाकेलाल, (हकलाते हुए) वाई दी वे।

मीना कहा तक पढे हैं आप ?

लडका जी मैंने बी० ए० पास किया है। बाई दी वे।

मीना जरा अपना प्रमाण पत्र दिखाइए। यानि सर्टि-फिकेट्स।

लडका जी ? हा व क क क्या ? प्रमाण-पत्र जी ? वो तो मैं घर पर ही भ भ भूल आया हू। जी वाई दी वे।

मीना तो फिर आप यहा क्यो आए हैं ? क्या करने आए हैं ?

लडका जी, वैसे इरादा तो तोरण मारने का था। जी आगे आपकी मरजी है। वाई दी वे।

मीना आप जाइए मि० वाई दी वे । आप रिजेक्ट हैं मि०

लडका वा वा के लाल। जी मैं जा तो रहा हू, वैसे एक बार अच्छी तरह सोच लीजिए, शायद मैं आपको पसद आ जाऊं।

मीना जी नही, आप मुझे कतई पसद नही आएगे मिस्टर वाकेलाल। जसे आए है वैसे ही सीधे रास्ते से चले जाए। या फिर धक्के खाकर जाएगे वाई दी वे !

[दूसरे उम्मीदवार का आना, जो एक कवि है]

कवि नमस्कार। क्या मैं यहा बठ सकता हू देवी जी ?

मीना हा, हा, बैठिए, आपका शुभ नाम ?

कवि *आहा, आहा, वाह, वाह, क्या पूछा है आपने !* अजी अनेको नाम हैं मेरे। जो चाहे कह लीजिए। जो आपको अच्छा लगे कह सकती हैं।

मीना आप तो कोई कवि मालूम होते है। क्या आप वाकई कविता करते हैं ?

कवि अरे वाह, क्या कयामत की नजर पाई है। काश कि जैसी नजर है वैसा दिल भी हो। खत का मजमून भाप लिया लिफाफा देखकर।

मीना आपने अभी तक अपना नाम नही बताया ? कुछ तो रखा होगा माता-पिता ने।

कवि मुझे कवि कोमल कहते है। कवि सुकुमार कोमल।

मीना अच्छा जी। कोमल जी, मान लीजिए, आपकी पत्नी बीमार हो जाए, तो आप उन्ह अपने हाथ से खाना बनाकर खिला सकते है ?

कवि जी नही, ऐसा नही हो सकता, कदापि नही।

मीना क्यो ? ऐसा क्यो नही हो सकता ?

कवि क्योंकि मेरे घर मे कुछ पकाने को होगा तब ना।

मीना तो आप क्या खाते-पीते हैं ? क्या यू ही भूखो मरते है ?

कवि हाय ! हम तो गम खाते हैं, आसू पीते हैं। ये ही

जीवन है।

मीना कविजी ! आप जाइए, मुझे आपके साथ शादी करके अपनी जिंदगी तबाह नही करनी। जहा खाने-पीने को ही न हो वहा मैं क्या करूगी ?

कवि अरे कुछ तो तरस खाइए, एक कवि कितनी दूर से आपके लिए कष्ट उठाकर आया है। सुकुमारिया तो मन मे अत्यत कोमल होती हैं।

मीना अब आप जाइए, अपनी रसोई मे जाकर आसुओ को पीजिए, गमो को खाइए।

मीना भोलू, अगले उम्मीदवार को भेजो।

भोलू चलिए भाई साहब, आप चलिए। आगे चलिए सरदार जी, कब से बीडी फूक-फूक कर घर को रेल का प्लेटफार्म बना रखा है।

[तीसरे उम्मीदवार का आना, जो एक अधेड उम्र का व्यक्ति है]

अधेड नमस्कार करता हू। नमस्ते। ओये वल्ले-वल्ले सोणिये।

मीना नमस्कार। कहिए अब तक आप कहा थे ?

अधेड जी मैं बार लाइन विच खडा था। मैं भागडा कररया था जी।

मीना क्या आप खाना बना सकते है ? मेरा मतलब है आप अपने हाथो से खाना बनाकर अपनी पत्नी को खिला सकते हैं, सरदार जी ?

अधेड तुसी कि बोले जी ? जी आप देखिए, मैका, मैं इत्थे शादी दा उम्मीदवार बण के आया हू, पाक शास्त्र दी परीक्षा देने नही।

मीना नही, नही, मेरा मतलब है कि यदि आपकी पत्नी

बीमार हो जाए तो क्या करेंगे आप ?

अधेड़ इलाज करवाऊंगा, ताकि वो ठीक हो जाए।

मीना तो क्या हाथ मे खाना बनाकर नहीं खिलाएंगे ?

अधेड़ आप तुसी कि कह रहे हैं ? मेरे खयाल से आपको वर नहीं रसोइया चाहिए। मैं तो बाज आया ऐसी शादी मे। तुसी कोई बावर्ची ढूंढिए बावर्ची। हैं शादी का इश्तेहार दिया है शादी करगी। ओ तुसी तो कुंवारीई रहणा है जी। मैं ता चला जी।

मीना पता नहीं कहा से चले आते हैं। भोलू, ओ भोलू !

भोलू जी मेम साब ! आया जरा बीडी फूंक दू बाहर ! (आता है)

मीना अगले उम्मीदवार को भेजो।

नौकर चलिए, आप चलिए जी, बहुत देर से बूढे साड की तरह रस्सी तुडा रहे हो।

[अगले उम्मीदवार का आना जो एक बूढा है]

बूढा (खासते हुए चले आना) आदाब करता हू मोहतरमा !

मीना क्या ? आप भी शादी के उम्मीदवार है ?

बूढा जी हा, उम्मीदवार भी हैं तलबदार भी हैं।

मीना आपकी उम्र क्या है ?

बूढा यही कोई साठ के आस-पास। कोई खास ज्यादा नहीं।

मीना साठ साल की उम्र मे भी शादी करने चले है आप ?

बूढा जी हा। क्यो नहीं, क्यो नहीं। साठ साल की उम्र कोई ज्यादा तो नहीं। आपने वो मिसाल तो सुनी

ही होगी—साठा सो पाठा। (खासता है)

मीना (हसते हुए) लेकिन आपका तो ये बुढापा है बडे मिया।

बूढा अरे! तो क्या हुआ मोहतरमा! आजकल के नौजवानो से तो अच्छा ही हू, जिनका पता ही नही चलता कि कब जवान हुए और कब डायरेक्ट बूढे हो गए।

मीना मिया आपके सारे बाल तो चादनी की तरह सफेद हो गए हैं?

बूढा बालो पर न जाइए मोहतरमा। दिल मे झाकिए हा दिल मे। सर पे बुढापा है लेकिन दिल तो अभी जवान है।

मीना मैं कहती हू इस उम्र मे ये बाते करते आपको शर्म नही आती?

बूढा इसमे शम की कौन सी बात हैं मोहतरमा! आपका इश्तेहार अखबार मे पढा, सोचा चलो किस्मत आजमाए, शायद तकदीर की लाटरी खुल जाए। यकीन कीजिए सीधा लखनऊ से चला आ रहा हू।

मीना तो फौरन लखनऊ का टिकिट कटाइए और वापस चले जाइए। आपकी जेब मे पसे हू?

बूढा हैं। हाय-हाय यह क्या कह रही हो आप? पैसे की क्या कमी है मोहतरमा? क्या गजब कर रही हैं। इतमीनान करिए, मेरे साथ आपकी जिंदगी आराम मे बसर होगी।

मीना किस जिंदगी की बात कर रहे हैं आप? आपका तो पल का भी भरोसा नही है, मुह मे दात नही पेट मे आन नही।

बूढा नही, नही मोहतरमा, देख लीजिए—दो दात तो मौजूद हैं।

मीना वो तो टूट जाएगे। दो-तीन दिन मे।

बूढा अरे मेम साब, किसी ने कहा ह, आदमी वो ही जिसके दात दो हो। कहिए कैसी कही ?

मीना बहुत बेकार। एकदम बोर। बकवास।

बूढा हे हे हे हे (हसते हुए) शुक्रिया।

मीना अब आप अपनी तशरीफ का टोकरा यहा से उठाइए। आप जाएगे या बाकी दात भी यही तुडवाएगे ?

बूढा हाय, हाय, अब मैं लखनऊ कैसे जाऊगा मोहतरमा ?

मीना किसी बस या गाडी से टकरा जाइए, अपने आप लखनऊ पहुच जाएगे। (प्रस्थान) कहा-कहा से चले आते है उम्मीदवार बनकर। मेरा तो सर चकरा रहा है उर्मिल। बस अब नही लेंगे इटरव्यू। बहुत हो चुका। मैं तो घबरा गई हू। नेक्स्ट।

[दक्षिण भारतीय आता है]

मुत्तूस्वामी (आते हुए) अय्ययो जी। नमस्ते।

मीना नमस्ते। बैठिए।

मुत्तूस्वामी दयवाद जी।

मीना आपका नाम क्या है जी ?

मुत्तूस्वामी हमारा नाम मुत्तूस्वामी है जी। हम इधर बभाई में अपना बिजनेस करता जी। अमारा फूट अक्सर बबई मे चलता है जी।

मीना आप खाना बना सकते हैं मि० मुत्तूस्वामी ?

मुत्तूस्वामी काना तो अम क्या अमारा बाप भी नई बना सकता

मीना अच्छा भोलू, उसे भी अदर भेज दो।

भोलू आइए, आप भी भाई साहब आइए।

उर्मिला देख जरा ठीक से बात करना, बेचारे का दिल मत तोड़ देना।

भोलू अरे चलिए न भाई साहब, खड़ा क्यू है ?

[उम्मीदवार का प्रवेश जो एक सभ्य व सुदर है]

मि० कुमार नमस्ते।

मीना नमस्ते, बैठिए।

मि० कुमार जी, शुक्रिया।

मीना आपका नाम ?

मि० कुमार जी मुझे कुमार कहते हैं। रमेश कुमार।

मीना शिक्षा कहा तक पाई है आपने ?

मि० कुमार मैंने एम० ए० किया है, और आजकल लैक्चरार हू गवर्नमेंट कालेज मे।

मीना अच्छा मि० कुमार, आप अपने हाथ से खाना बना सकते हैं ?

मि० कुमार इसकी कोई जरूरत नही। मेरे घर पर नौकरानी है खाना बनाने के लिए।

मीना और क्या आप अपनी पत्नी का साथ घुमाने ले जाना पसद करेंगे ?

मि० कुमार जरूर पसद करूगा, आखिर मेरा स्कूटर है किस-लिए ? मुझे खुशी होगी उसे घुमाकर।

मीना बहुत खुशी हुई आपसे मिलकर, आप हमे पसद हैं। आप शादी के लिए चुन लिए गए हो। आपका अदाज हमे अच्छा लगा।

मि० कुमार शुक्रिया। थक यू।

उर्मिला मुबारक हो मि० कुमार ! आप शादी के लिए सलेक्ट हो गए हैं।

मि० कुमार थैंक्यू वैरी मच। बहुत शुक्रिया आपका। अब जब मैं आप लोगों को पसद आ ही गया हू तो जरा वो लडकी भी मुझे दिखा दीजिए जिससे मुझे शादी करनी है, जो मेरी जीवनसाथी बनेगी।

मीना जी जी जी क्या कहा आपने ? लडकी ?

मि० कुमार जी हा, जी हा। दरअसल मेरा फैसला है कि मैं बिना लडकी देखे शादी नही करूगा। ये मैंने बहुत पहले ही सोच लिया था कि देखकर ही शादी करूगा।

मीना तो क्या ? मैं आपको लडकी दिखाई नही देती ? आपके सामने ही तो खडी हू।

मि० कुमार जी ? आप मजाक कर रही है ? ये क्या कह रही है आप ? मैं तो आपका बच्चा हू। आप लडकी को बुलाइए ना, प्लीज ये वक्त मजाक का नही है। फौरन बुलाइए ना।

मीना (गुस्से से) क्या कहा आपने ? आप मेरे बच्चे हैं ? शादी के लिए विज्ञापन मैंने ही तो दिया था। मैं ही शादी करना चाहती हू। लडकी मै ही हू।

मि० कुमार लेकिन मैडम, मुझे तो अभी अपनी पहली ही शादी करनी है।

मीना तो तुम क्या समझते हो, मैं कोई चौथी शादी करने जा रही हू ?

मि० कुमार देखिए, दरअसल मैं अपने दिमाग मे ऐसी भयानक तस्वीर अपनी होने वाली पत्नी की बनाकर नही आया था। मैं तो कुछ और ही सपने लेकर आया

था। माफ कीजिए, दरअसल मैंने तो आपको लडकी की अम्मा समझा था। क्षमा कीजिए। तकलीफ उठानी पडी आपको। अब मैं आज्ञा चाहूंगा।

मीना मि० कुमार, आप बडे अजीब आदमी हैं, बदतमीज है, आप आदमी नही हैं।

मि० कुमार जी बस रहने दीजिए, मैं आपके साथ शादी करके अपनी जिंदगी बरबाद नही करूंगा। आप तो क्वारी ही रहेगी तो ज्यादा सुदर लगेंगी, समझ गई। मैं चला, नमस्कार। दुबारा कभी इश्तेहार दें तो सोच-समझकर दें। नमस्कार।

मीना हाय उर्मिल, क्या मुझे जीवन मे ऐसे ही रहना पडेगा! हाय कब खत्म होगी तलाश जीवनसाथी की।

पति-विरोध कवयित्री सम्मेलन

[स्थान—रमेश का मकान।]

रमेश रत्ना रत्ना (और जोर से) अरे सुनती हो, कहा हो तुम ? मेरे आफिस का टाइम हो रहा है और तुम हो कि

रत्ना (पास आकर स्वर) आ तो रही हू। क्यो आसमान सर पर उठा रहे हो चीख-चीख कर ?

रमेश अच्छा तो सुबह से ही आपने ये कविता लिखना शुरु कर दिया है, सुबह कविता, शाम को कविता, उठने कविता, बठते कविता, मैं कहता हू रत्ना ये कविताए तुम फालतू समय मे लिखा करो।

रत्ना कुछ और भी कहेगे या केवल कविताओ को ही कोसते रहेगे।

रमेश घडी की तरफ देखो साढ नौ बज रहे हैं, खाना तैयार है ?

रत्ना बस अभी तैयार हो जाता है। सब्जी वन रही है तब तक मैं कविता

रमेश बीच मे ही क्या ? खाना अभी तक तैयार नही

हुआ और तुम कविता लिखने मे व्यस्त हो। मैं कहता हू रत्ना ये बातें मुझे कतई पसन्द नही है।

रत्ना आप तो बेकार ही बिगड रहे है।

रमेश मै ठीक कहता हू रत्ना, तुम हमेशा गलत समय पर कविताए लेकर बैठ जाती हो। अभी तो इसे बन्द करो बाद मे लिख लेना।

रत्ना जी नही, मैं कविताए लिखना नही छोड सकती। बडी मुश्किल से तो आज मूड बना है।

रमेश (कुछ क्रोध से) ये क्या मजाक है रत्ना, जब तुम्हे खाना बनाना होता है उस समय तुम कविता लिखने के लिए मूड बनाती हो। जब चाय के लिए कहता हू तुम चतुष्पदिया लिखने बैठ जाती हो।

रत्ना (कुछ रुआसी होकर) हा-हा, ये ही कहोगे। नौकरानो की तरह घर का काम करने के बाद भी मेरी तकदीर मे ये ताने सुनना ही लिखा है।

रमेश कौन-सा काम करती हो तुम जरा हम भी तो सुनें? जब भी किसी काम के लिए कहता हू तुम कुण्डलिया लिखने के लिए कुण्डली मार कर बैठ जाती हो। अभी कल ही छोले बनाने के लिए कहा था, किंतु तुम छन्द बनाती रही। दही जमाने के लिए कहा था, लेकिन तुमने अपने नीरस दोहे सुनाकर इस माग को भी ठुकरा दिया।

रत्ना (सिसकियो के स्वर मे) कभी तारीफ भी की है आपने मेरे किसी काम की। जब भी कविता

लिखने बठती हू आप इसी तरह ताने कसते रहे हो।

रमेश मैंने पिताजी से पहले ही कह दिया था कि मैं कवयित्री से शादी नही करूगा। मगर क्या करू तकदीर ही ऐसी थी। दरअसल तग हो गया हू मैं तुम्हारे सडियल इस साहित्यिक शौक से। ऊब गया हू तुम्हारे कबीर का रहस्यवाद सुनते-सुनते।

रत्ना (रोते हुए) तो अब क्या हो गया है, साफ-साफ क्यो नही कहते कि आप मुझसे ऊब गए हैं। क्यो बहाने गढ रहे हो ? ऐसी ही बात है तो मैं आज ही अपने मायके चली जाऊगी।

रमेश आज क्यो अभी चली जाओ, मुझ पर इन मगर-मच्छ के आसुओ का असर नही होने वाला।

रत्ना ठीक है, मैं आज ही रात की गाडी से चली जाऊगी।

रमेश अपना बैडिंग बाधकर तैयार रखना। (घडी की ओर देखकर) पौने दस बज गए, मेरे आफिस का टाइम हो गया है मैं जा रहा हू। (रमेश का प्रस्थान—रत्ना के रोने का स्वर—रत्ना का दरवाजा बन्द करना)

रत्ना (स्वय ही) जमाना बदल गया लेकिन इन पतियो का दिमाग अभी तक नहा बदला। बीसवी सदी मे भी कितने दकियानूसी विचार इन पर हावी हैं। नारी को दासी समझते हैं, पैर की जूती मानते हैं। ठीक है, मैं भी आज मायके चली जाती हू, दिमाग अपने आप ठीक हो जायेगा। जब हाथ

से रोटिया सेकनी पडेंगी। (द्वार पर खटखटाहट। रत्ना दरवाजा खोलती है। दो महिलाओ का प्रवेश। दोनो महिलाए साथ साथ नमस्ते) क्या कवयित्री रत्ना कोकिल आप ही है ?

रत्ना जी हा, कहिए कैसे आना हुआ।

महिला जी वात ये है हमारे महिला सघ की ओर से आज एक पति-विरोध कवयित्री सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

रत्ना वडा अच्छा विपय रखा है आपने।

दूसरी महिला जी हा, इसके लिए हमने सभी कवयित्रियो को वुलाया है। आपके पास भी इसीलिए हम आई हैं कि आप भी हमारे सम्मेलन मे पधारें।

रत्ना लेकिन आज तो मैं शायद (कुछ सोचते हुए) अच्छा ये वताइये, कितने वजे है ये आपका सम्मेलन ?

पहली महिला (आमन्त्रण पत्र देते हुए) ये आमन्त्रण पत्र लीजिये, इसमे स्थान और समय आदि सभी लिखे हुए हैं।

रत्ना (प्रसन्नता से) अरे ये तो वडा ही अच्छा समय रखा है आपने, आज तीन वजे।

महिलाए जी हा, अवश्य आइये और हा इसी विपय पर कुछ लिखकर लाइए।

रत्ना ठीक है, मैं अवश्य आ जाऊगी।

महिलाए अच्छा तो हमे आज्ञा दीजिए। नमस्कार।

रत्ना नमस्कार। (द्वार वन्द करने का स्वर)

[दृश्य परिवतन। स्थान—सम्मेलन। नारी स्वर उभरते हैं—आपस मे स्त्रियो के वात करने के

स्वर सुनाई पडते हैं। माइक पर सयोजिका का स्वर)]

सयोजिका वहनो, आज वडी ही प्रसन्नता के साथ मैं आपको कहती हू कि हमारे महिला मघ ने एक पति-विरोध कवयित्री सम्मेलन आयोजित किया है। हर विवाहित महिला जानती है कि ये तथाकथित पति परमेश्वर किस प्रकार हम पर शासन करते हैं। लेकिन वहनो, अव हमे चुप नही वैठे रहना है। इनके लिए कोई न कोई इलाज तो ढूढना ही है। खैर, मै भाषण को यही समाप्त कर आपको अपने शहर की प्रतिष्ठित कवयित्री वहनो की कविताए सुनवाती हू। इन सभी कविताओ मे आपको ये ही विचार सुनने को मिलेंगे। सबसे पहले पति-विरोध कवि सम्मेलन की शुरुआत कर रही हैं हमारे शहर की जानी-पहचानी कवयित्री श्रीमती रेखा कोयल। (तालियो के स्वर) आइये वहन कोयल।

कोयल (माइक पर) वहनो, आज के कवयित्री सम्मेलन के विषय से तो आप परिचित ही है। दरअसल मैं इन सव झगडो और कष्टो की जड शादी को मानती हू। क्योकि जब हम शादी ही नही करेंगी तो पति होगा ही नही। इन्ही विचारो को मैंने लिखा है।

शादी करना बेकार सखी। (खूब वाह-वाह के स्वर) क्या क्या वतलाऊ तकलीफें। तुम खुद ही करो विचार सखी। आगे लिखती हू—पति तो परमेश्वर होता है, पत्नी चरणो की दासी है,

ऐसे अपमानित जीवन से तो, जीना है धिक्कार
सखी शादी करना बेकार सखी, हम कुछ भी
बोल नही सकती, इनकी चलती मनमानी, दासी
से बदतर हालत है कहने को घर की रानी है,
ये पति देव ही करते हैं, जीवन का बटाढार
सखी। शादी करना बेकार सखी। अंतिम है—
कब तलक चलेगी दुनिया मे, इन पतियो की ये
मनमानी, लेंगी अधिकार बराबर के, हमने भी
मन मे है ठानी, नारी और पुरुष बराबर हैं, य
भी चोख रही सरकार सखी। (तालियो की
गडगडाहट। वाह-वाह, खूब आदि के स्वर)

सयोजिका अभी आपने एक बहन के विचार सुने। अब एक
कविता श्रीमती सुषमा शबनम से सुनिए। ये
हमारी क्रान्तिकारिणी सदस्या है। जोशीली
कविताए लिखती हैं। सुषमा बहन। (तालियो
की गडगडाहट)

सुषमा मैं आपके समक्ष एक कुण्डली प्रस्तुत कर रही
हू। इसमे मैंने सभी बहनो से कुछ कर गुजरने
का आह्वान किया है। लिखा है—
दुनिया-भर की पत्नियो सब हो जाओ एक।
(वाह-वाह।)
पती नाम के जन्तु के घुटने डालो टेक।
घुटने डालो टेक छुडादो इनके छक्के—।
(वाह वाह)
घुसे घरो मे मत घुसने दो मारो धक्के।
पत्नी को दे ब्लफ बसी दिल मे मिस मुनिया।
इसीलिए पत्नियो बदल कर रख दो दुनिया।

महिलाए   वाह शबनम बहन ।

सयोजिका   शात बहनो ! हा तो अब आपके सामने उर्दू की शायरा श्रीमती जमीला शमा अपना कलाम पेश कर रही हैं । आइए जमीला बहन !

शमा   मेरी प्यारी बहनो, आपकी खिदमत मे आज के इसी सब्जेक्ट पर एक रुबाई पेश कर रही हू । सुनिए—

दिखते हैं जो घर मे, उन्हे शौहर नही कहते,
बने आफत जो माथे की उसे शौहर नही कहते ।
जमाने भर के खाविन्दो जरा ये ध्यान से सुन लो,
दुखाय दिल जो बीबी का उसे शौहर नही कहते।

[वाह-वाह बहुत अच्छा खूब लिखती हो]

सयोजिका   बहनो, अब इसी विषय पर लोकप्रिय कवयित्री श्रीमती रत्ना कोविन्द की कविता सुनिए । आप कवयित्री होने के साथ साथ एक अच्छी गायिका भी हैं । आइए कोविन्द जी ।

रत्ना   बहनो, मैं आपकी सेवा मे एक कविता पेश कर रही हू । (गाकर)

ये पति क्यो हमे सताते हैं,
प्यार झूठा सदा जताते हैं,
हमको दासी समझते हैं लेकिन,
खुद को परमात्मा बताते हैं,
डाट दफ्तर मे बॉस की खाते हैं,
रौब हम पर मगर जमाते हैं,
आज आफिस मे काम ज्यादा था,
ये बहाने सदा बनाते हैं ।
रोज ही लेट घर पे आते हैं

और खाते ही लेट जाते हैं।

आखरी है—हाय जिम रोज जाती हू मैं मैके।
बस उसी दिन ये मुस्कराते हैं।

सयोजिका बस बहनो श्रीमती रत्ना कोकिल आज के पति विरोध कवयित्री सम्मेलन की अन्तिम कवयित्री थी। अब मैं इस सम्मेलन की समाप्ति की घोषणा करती हू। अब हम परमपिता परमेश्वर से सभी नारियो के कल्याण और मगलमय भविष्य की प्रार्थना करेंगी। उसका तरीका ये होगा हमारी सघ की दो महिलाए पहले प्राथना बोलेंगी और उसके बाद सभी उन पक्तियो को दोहरायेंगी। (महिलाए प्रार्थना करती हैं) परम पिता परमेश्वर जगत मे नारी का उद्धार करो। [सब एक साथबोलती हैं। रत्ना सबसे तेज बोलती है।]

रमेश रत्ना-रत्ना! ये क्या हो रहा है अरे तुम तो सोई हुई भी कविता की रचना कर रही हो। हाथ पकड कर उठाता है। उठो आज उठने का इरादा नही है क्या?

रत्ना है, क्या हुआ, क्या हो गया?

रमेश जगने का समय हो गया है, देखो सूरज निकल आया है। अब उठिए जल्दी ही एक कप चाय पिलाइए।

बात एक दफ्तर की

[समय प्रातः ग्यारह बजे—अधिकारी मिस्टर पणिक्कर अपनी सीट पर बैठे हैं सामने फाइलों का ढेर लगा है। वो एक फाइल देख रहे हैं। बाहर गेट पर चपरासी चगू बीडी फूक रहा है और बुरे गले मे गा रहा है (अंग्रेजी मे कहते है कि) पणिक्कर घण्टी बजाता है। चगू कोई ध्यान नही देता है। फिर आवाज लगाता है, "चगू ओ चगू (चीखता है) चगू?")

पणिक्कर चगू कम इन।

चगू (गाना बद करके आते हुए) क्या कहा साब आपने? कमीन? हम आपको कमीन दिखते हैं? आपने हमको गाली दी?

पणिक्कर ओह नो। आई मीन ।

चगू अरे रहने दो साब, ये आपका कमीन और आईमीन इधर नही चलने वाला। अफसर हैं तो कोई गाली निकालने के लिए थोड़े ही हैं।

पणिक्कर मिस्टर चगू । हमने गाली नही दिया तुमको। तुम गलत अडर स्टण्ड कर रहा है।

चगू ये आपका अडर स्टेण्ड और बस स्टेण्ड अपने खोपडे मे नही आता सार! हमसे सीधे ढग से बात किया करो।

पणिक्कर अरे भाई, मैंने तुमको गाली नही दिया, मैंने तो कहा —अदर आओ !

चगू तो ऐसा बोलिए ना साव—हिन्दी मे।

पणिक्कर हिन्दी मे नही बोल सकता—हिन्दी प्रोबलम है।

चगू हिन्दी मे बात नही कर सकते तो हिन्दुस्तान मे पैदा क्यो हो गए ? (फुसफुसाते हुए)

पणिक्कर क्या ? What ? क्या कहा तुमने ?

चगू कुछ नही साव ! कुछ नही बोला—आप कहिए कसे बुलाया था मुझे ?

पणिक्कर मैं आधा घण्टा से बेल बजा रहा हू, तुम सुनता नही है ?

चगू सुनते ही तो आ गए साव ! वैसे आप तो मालिक हैं इस दफ्तर के आप चाहे तो दिन भर घण्टी बजा सकते हैं, आपको कौन रोक सकता है ?

पणिक्कर (क्रोध मे) ओह यू शट अप।

चगू कौन सी अप साव ! ये कोई रेलगाडी है क्या ?

पणिक्कर अरे मैंने बोला—शट ! चुप रहो ! मुह बद रखो।

चगू जवाब देने के लिए तो मुह खोलना ही पडेगा न साब !

पणिक्कर अब तुम अपना मुह बद करके उधर जाओ बाहर—दरवाजा खोलकर और जाकर मिस्टर दीनदयाल को भेज दो इधर। नाऊ गो। गेट आऊट। (चगू जाता है)

पणिक्कर (स्वत) ओ माई गॉड ! व्हाट ए टिपिकल मेन ! हमको समझ नही आता, ये लोग हिन्दी मे क्यू समझता है—अग्रेजी मे क्यू नही बोलता। अग्रेजी लेंग्वेज कितनी अच्छी है—कम वर्ड्स मे बहुत बात।

और एक हिन्दी मे दस सेंटेंस बोलो तो मीनिंग एक सेंटेंस का निकलता है। मगर इधर का लोग कुछ अनएजुकेटेड है। हिन्दी के पीछे पडा है ये समझते क्या हैं All nonsense always create problems

दीनदयाल (घुसते हुए) क्या मैं अदर प्रविष्ट हो सकता हू श्रीमान् ?

पणिक्कर ये आप अदर आने की परमीशन माग रहे है या मेरे हैड पर हैमर चला रहे हैं! कितनी वार आपसे कहा है अग्रेजी मे बात किया कीजिए—But you dont obey me आइए, मैं ये आपकी फाइल ही देख रहा था।

दीनदयाल कुछ दिखाई दिया इसमे श्रीमान् सर ?

पणिक्कर क्या मतलब ? What do you mean ?

दीनदयाल मेरा मतलब कोई गलती ?

पणिक्कर यू मीन मिस्टेक्स ? एक हो तो बताऊ, आपने तो बहुत मिस्टेक्स की हैं।

दीनदयाल कैसे सर ?

पणिक्कर मैंने नोट लिखा था कि आप आफिस के काम के लिए स्क्रू ड्राइवर मगा सकते है। आपने जवाब मे फाइल मे लिखा है स्क्रू मगा लिए हैं—ड्राइवर के लिए एडवरटाइजमेट कर दिया है।

दीनदयाल इसमे क्या गलत हो गया सर ?

पणिक्कर दीनदयालजी, आप अग्रेजी समझते नही हैं—उसे गलत यूज करते हैं। अब आपने यहा कितनी मिस्टेक्स कर दी है—कुछ पता है ? वाइफ को लाइफ लिखा है। Demond को रिमाड लिख दिया है।

दीनदयाल सर, अग्रेजी, मैं इसलिए लिखता हू कि हिन्दी पढने मे

आपको डिफीकुल्टी होती है।

पणिक्कर (माथा पकडता है) दीनदयाल जी, डिफीकुल्टी नही, डिफीकल्टी।

दीनदयाल क्यो सर, ऐसा क्यो ? जब put पुट होता है तो येCulty कुल्टी क्यो नही ? सौरी सर ! मैं आपसे डिसकुस करने लगा।

पणिक्कर आपको अंग्रेजी कम आती है शायद मि॰ दीनदयाल— आपकी तबियत तो ठीक है न ?

दीनदयाल जी साब समर्थिग इज वैटर दन नथिंग।

पणिक्कर तुम लोगो को कभी अंग्रेजी बोलना नही आएगा। और जब तक अंग्रेजी ठीक नही होगा कुछ नही होगा, नथिंग विल हैपन।

दीनदयाल ये बात नही है सर ! इतनी अंग्रेजी तो हम लोगो को आती है। हम अपना काम आराम से चला सकते हैं।

पणिक्कर क्या अंग्रेजी आता है आपको। हमने लिखा था हमारी कंपनी मे ऐसा होता है और होता ही जाता है। आपने इसकी अंग्रेजी बनाई है—व्हाट एवर इज डन इन अवर कंपनी—देट इज डन डना डन-डना डन। *English* ? मि॰ दीनदयाल, आपकी इस Poverty से मेरा तो मूड ओफ हो जाता है। कब सीखेंगे आप लोग अंग्रेजी। अब आप जाइए। (दीनदयाल जाता है) अरे हां— मि॰ दीनदयाल, सुना कल आपकी वाइफ की तबियत ठीक नही थी Somebody was telling क्या हुआ उन्हे ?

दीनदयाल पता नही सर, शाम को जब मैं आफिस के काम के बाद घर पर पहुचा तब तक तो बिल्कुल ठीक थी, अचानक नोन सस हो गई।

पणिक्कर दीनदयाल you are very poor in English आपको बहुत प्रेक्टिस करना चाहिए।

दीनदयाल ये बात नही है सर, हमारे मोहल्ले मे तो अग्रेजी का तार सब मुझसे ही पढवाते हैं।

पणिक्कर (आश्चय से) अच्छा। वेरी गुड।

[इतनी ही देर मे मैथ्यू और पीटर लडते हुए अदर आते हैं]

मथ्यू सर, मिस्टर पीटर ने हमको एब्यूज किया। उसने हमे डकी कहा।

पीटर नो सर, इसने स्टार्ट किया क्वारलिंग। इसने मुझे इडियट कहा।

पणिक्कर ओ० के० Now, no self introduction, I know each of you Who is witness

मैथ्यू सर, चगू was there You can call him

[घटी बजाता है चगू आता है]

पणिक्कर चगू, तुमने इन दोनो को लडाई करते देखा ?

चगू देखना ही पडा साब, उस वखत हम वही पर थे।

पणिक्कर क्या किया इन दोनो ने ?

चगू दोनो एक दूसरे को कुछ कह रहे थे।

पणिक्कर क्या कह रहे थे ?

चगू ये हम क्या जाने साब, ये क्या कह रहे थे ?

पणिक्कर क्यू ? तुम तो वहा पर थे ?

चगू मौजूद था साब, मगर इनकी बात मेरे पल्ले नही पटी। ये लोग अग्रेजी मे लड रहे थे, और मैं अग्रेजी जानता नही हू ।

[सब हसते हैं]

पणिक्कर चगू, ये बात तुमने ठीक कही। अग्रेजी तुम्हे नही

शर्म आती है मगर

आती।

चगू अरे हा साव, एक वात तो कहना भूल गया। (रोता है)

पणिक्कर अरे क्या वात है ? रोता क्यो है ?

चगू सर, आपके पास जो वगाली वावू रहते हैं उन्होंने कहा है कि आपकी मेम साव का तार आया है।

पणिक्कर क्या ? What happened ? वो तो वच्चो को लेकर अपनी मा के पास गई है।

चगू वही से तार आया है साव ! वो अभी कहकर गए। जल्दी मे थे, आप झगडा निपटा रहे थे। उन्होने कहा कि आपकी मेम साहव आज मर गई हैं।

पणिक्कर (चीखकर) ओ नो ! Dont Late। ये क्या हुआ। (सव सात्वना देते हैं) मैं क्या करु। हाये मेरी wife ! How sweet she was मैं तो वरवाद हो गया। (बुरी तरह रोता है। फोन की घटी वजती है) हैलो—येस चटर्जी हा मैं पणिक्कर क्या क्या मेरी वाइफ—अजमेर गई है ! (हसता है) चगू, मेरी वाइफ अजमेर गई है—आज मरी नही है।

चगू सर, जैसा मैं समझा कह दिया, मुझे माफ कर दें, साव !

पणिक्कर नही नही, माफी की क्या वात है। दरअसल ये सारा घपला अग्रेजी की वजह से हुआ। अव मेरे समझ मे आ गया—सारे देश के लिए हिन्दी क्यो जरूरी है। हम सव भाई मिलकर एक ही भाषा वोलें तो सव समझ जायेंगे और दिक्कत भी नही होगी। तो सुनो—आज से इस दफ्तर का सारा काम हिन्दी मे होगा। मैं भी हिन्दी मे काम करूगा। (सव हसते हैं)

भूगोल मेरे मोहल्ले का

जिस मोहल्ले मे मैं रहता हू, वहा लोग कम रहते हैं, हल्ला ज्यादा रहता है। पति कम रहते हैं, पत्निया ज्यादा या यू कहिए कि पति तो बिल्कुल नही के बराबर रहते हैं। उन्हे बीविया रहने दे तब न। आपने सुना होगा एक बार किसी साहब को एक बहुत अच्छी पढी लिखी घरेलू तमीजदार खूबसूरत बीवी की जरूरत थी। उन्होने अखबार मे इश्तहार दिया। दूसरे दिन उनके पास जो चिट्ठियो के ढेर लग गए। सभी मे लिखा था, मेहरबानी करके मेरी बीवी ले जाइए। बहुत दिनो तक तो मुझे भी इस बात पर यकीन नही आया था लेकिन अब मैं सौ फीसदी ऐतबार के साथ ये कह सकता हू। कि ये ही वो मोहल्ला है जिसके सभी शोहरो ने वो चिट्ठिया लिखी होगी। इससे पहले कि मैं अपने पडोस की जुगरफियाई हालत बयान करू कुछ जरूरी बातें उनके बारे मे बताना निहायत जरूरी महसूस करता हू। समझने के ऐतबार से कुछ पोइन्ट्स ये हैं।

मौसम—यहा का मौसम वैसे तो काफी खुशनुमा और कहकहो से भरा होता है लेकिन शाम के वक्त जब शोहर घर पर आते हैं मौसम एक दम बदल जाता है, कुछ खुश्की आ जाती है, काफी गरज और धमाके होने लगते है और बजाय प्यार की

वारिश के तानो, फटकारो गिनो और शिक्वा की बौछार होने लगती है। यहा पर प्यार का मौसम कभी नही होता है, जिस वक्त ये वीविया गरजती हैं और वरसती हैं उस वक्त वेचारे शोहरो की हालत काविले नुमाइश होती है कभी-कभी तो गर्मियो मे भी आसू का सैलाव आ जाता है। जिस वाढ मे वहुत से खुश नसीव शोहर वहकर कभी के शफा पा चुके लेकिन कुछ वदनसीव शोहर अभी तक भी इसी वाढ मे उलझे ह जिनके गले तक पानी आकर वापस लौट जाता है वो किसी ऐसी वाढ के इन्तजार म हैं जिसमे वो वहकर जाए लेकिन लगता है इन पैदाइशी दुखी दासो के लिए तो वाढ कभी नही आयेगी। मेरे पडोस की वीवियो मे वस दो ही मौसम पाए जाते हैं। या तो लडने का या फिर बैठकर गपशप करने का। उसमे खासतौर से एक दूसरे की बुराई करने का पतियो के लिए वो मौसम अच्छा माना जाता है जव वीविया घर पर न हो।

पैदावार—आप चौकिये नही, ये तो सभी जानते है कि जहा पर वीविया होगी वहा पर वच्चे तो होगे ही। वैसे कुछ तरक्की पसन्द लोग विना वीवियो के वच्चे पदा करना ज्यादा अच्छा मानते हैं ख्याल अपना अपना। बच्चो के अलावा जितनी अच्छी नस्ल और किस्म का झगडा मेरे मोहल्ले की वीविया पैदा करती है, उतना अच्छा शायद ही किसी दुनिया के कोने मे पैदा होता हो। एक से वढकर एक और खूवसूरत यही पर पैदा होती है। कुछ वीविया तो काम ही सिर्फ ईजाद करने का करती हैं और फिर कुछ उन गालियो का एडवरटाइजमेन्ट प्रेक्टिकल मे करती हैं। मेरे ख्याल से अगर मेरे पडोस की वीवियो के जरिए जो झगडा फसाद पैदा किया जाता है उसे अगर दुनिया के प्रोडक्शन को देखकर दातो तले अगुली दवा लेंगे इससे फौरन पालिसी मे काफी फायदा होने की गुजाइश है। अगर ये झगडे

दुनिया के और हिस्सो मे भी भेज दिए जाए तो फिर किसी को हम पर हमला करने की फुरसत ही नही मिलेगी। और कितने ही फायदे गिनाऊ मैं आपको।

हालात—इसे हिंदी भाषा मे स्थिति कहा जाता है। वैसे सभी बीवियो की स्थिति काफी मजबूत होती है सिर्फ शोहर की डावाडोल रहती है। यहा बीवियो की स्थिति मे कोई खास अन्तर नही आया सिर्फ कुछ खास परिस्थितियो को छोड कर। हा, एक बात जरूर है बीवी घर पर न होने से या मायके चले जाने की स्थिति मे शोहर के चेहरे पर एक विजय की मुसकान देखी जा सकती है। यहा हर बीवी अपने से ज्यादा दूसरे की स्थिति के लिए जागरूक है। जो साडी पडोसन ने पहनी है, वो ही अगर दूसरी बीवी के पास नही आती है तो शोहर की स्थिति मे काफी भयानक बदलाव आने के अवसर आ जाते हैं। और फिर वैसे भी तूफान से तो हर आदमी डरता ही है। डरना चाहिए।

खानपान—खाने के नाम पर तो मोहल्ले की बीविया फकत एक दूसरे का मगज खाने मे ज्यादा यकीन रखती है शोहरो के दिमाग और मगज चाट चुकने के बाद ये बलायें पडोसनो पर नाजिल होती है और फिर एक दूसरे का दिमाग बस पचाती रहती है।

पशु-पालन—इस जगह सबसे अच्छे, सस्ते और टिकाऊ पशुओं के नाम पर आते हैं बच्चे। जब देखिए दो बच्चे कन्धो पर एक गोद मे और एक को अगुली से लगाए लदे-फदे चले जा रहे है बीविया तो निहायत खाली हाथ हिलाती है। कमर को मटकाती हुई बस पीछे-पीछे चलने की रस्म अदा करती है। वैसे अब ये बात भी काफी दकियानूस मानी जाने लगी है कि बीविया पीछे चलें। अपनी-अपनी खिदमत के हिसाब से इस मोहल्ले मे हर शाहर का चन्द खिताब भी अता किए जाते है। मिसाल के तौर

पर निखट्टू अडियल टट्टू जुगादी बन्दर वगैरा वगैरा अब इन नामो को सुनकर आपको कोई शक नही रहा होगा । इस मोहल्ले की चन्द पढ़ी-लिखी और एप्रोच वाली बीविया इसी मोहल्ले के एक जाने-माने शोहर को खतोकितावत कर रही हैं खुदा उन्ह इस नेक इरादे मे कामयाबी अता फरमाए ।

काम-धन्धा—मेरे पडोस की बीविया कोई खास काम धन्धा नही करती । शोहर ही करते है ये घर पर रहती है ये ही क्या कम बडा काम है । कोई बहादुर आकर पूछे इनसे कि ये कितनी तक लीफें उठा रही हैं इस घर की चारदिवारी मे शोर शराबा करने गधे हाकने, लडने, एक दूसरे से लडवाने, शोहर से झगडने फट कारने, रोने पीटने जैसे बडे कामो से फुरसत मिले तो ये कुछ और करे कुछ पढी लिखी बीविया भी मेरे पडोस मे हैं लेकिन वो घर पर नही पाई जाती हैं ।

अब आप ये सोच रहे होगे कि मैंने ये इतना बडा काम आखिर कर कैसे दिया इसके कई वजूहात हैं । मैं जिस मकान मे रहता हू, उसमे चारो तरफ से बस ये बीविया ही दिखाई देती हैं, पाई जाती है और कुछ तो कोशिश करने पर भी नजर नही आती है । अब आप ये न पूछियेगा की मेरी बीवी कैसी है बस ये समझ लीजिये कि उसकी गैर मौजूदगी मे ही ये सब कुछ लिख पाया हू ।

महाकवि अफन्डी का कविता केन्द्र

खुल गई। खुल गई। चौंकिए नही। किसी स्टट की लाटरी नही खुली है। किसी मनचली खटारा गाडी की चूलें नही खुली हैं। ये तो इस देश के शायरो, लेखको और कवियो की किस्मत खुल गई। देश भर मे तहलका मचा देने के बाद, बडे-बडे पुरस्कार कई बार ठुकरा देने के बाद हजारो मुशायरो और कवि-सम्मेलनो में हूट हो जाने के बाद। महाकवि ने कुछ दिनो के लिए अपना कविता केन्द्र चादनी चौक मे खोल लिया है। होली के शुभ अवसर पर हर तरह की रचनाए नई या पुरानी, कविता या कहानी, दोहे या चौपाई, शेर या रुबाई आप निहायत सस्ते दामो मे इस दुकान से खरीद सकते हैं और फिर अपने नाम से पढकर, सुनाकर छपा कर वाहवाही लूट सकते हैं, दाद पा सकते हैं। इस देश के कवियो, शायरो और लेखको के लिए ऐसा सुनहरा मौका बार-बार नही आएगा। इस दुकान से खरीदे हुए माल की पूरी गारन्टी है। एक बार आप इस कविता केन्द्र पर आइए तो सही। डरिए मत, झिझकिए मत, हम आपको परिवार नियोजन केन्द्र पर नही बुला रहे। महिला कवयित्रियो के लिए भी हमारे यहा पर उन्ही के हिसाब से लिखी कविताओ का बेहद अच्छा स्टॉक है। उन्हे अब किसी कवि से

मुस्करा कर रचना मागने कि कोई जरूरत नही वो दिन अब लद गए। एक बार आप साडी सेन्टर पर जाने के बजाय इस कविता केन्द्र पर आकर तो देखें बेहद आकर्षक विषयो पर तरह-तरह की रचनाए हमारे यहा थोक भाव मे उपलब्ध हैं। हमारे एजेंटो को घटी दरो पर माल सप्लाई किया जाएगा। ऐसा कौन-सा विषय है जो महाकवि अफन्डी से छूट गया हो। आप पायेंगे कि इनकी क्या निराली शान है। एक दो चार नही पूरे शेरो की खानें हैं। ये साथ मे इनकी बीवी हैं, जिनकी बगल मे पानदान है। प्यारे कवि बन्धुओ, लेखको, इस मौके को चूक मत जाना। एक बार बस एक बार हमारी दुकान पर आना और सस्ते भाव से कवितायें ले जाना ऊचे कवि-सम्मेलनो और मुशायरो मे सुनाना और फ्री मे अपना रग जमाना। हम आपको मिसाल के तौर पर बानगी बता देते है। मसलन हास्य रस के कवि इन रचनाओ से कमाकर खा सकते हैं—

शेर अर्ज है—

आफतें आएगी सर पर मुझे मालूम न था
इस तरह फूटेगा ये सर मुझे मालूम न था
मैं तो समझा था मेरे प्यार का है ताजमहल
तेरे बाप का है घर मुझे मालूम न था।

फिर श्रोताओ पर ये गीत फेंकिये—

इस तरह चली गईं तुम मुझको छोडकर
जैसे चली गई भैंस रस्सा तोडकर।

सर फिरे और मनचले लोगो के लिए ये रुबाई कैसी रहेगी।—

बुढापा दे रहा है दस्तक सी
जवानी का हिसाब कर ही लू
लडकिया कह रही हैं अक्लजी
सोचता हू खिजाब कर ही लू।

और भी इस तरह की सेन्डों रचनाए हमारे यहा हैं महिला कवयित्रियो के लिए खास डिजाइनों में रचनायें हमारे यहा हैं।—

दुनिया भर की पत्नियों सब हो जाओ एक
पति नाम के जन्तु के घुटने डालो टेक
घुटने डालो टेक छुडा दो इनके छक्के
घुसे घरों में मन घुनने दो मारो धक्के

इसके बाद कोई कवयित्री हट नहीं हो सकती। फौरन आइए ज्यादा माल लेने पर कुछ छूट हो सकती है। दो बडे लेख खरीदने पर दो दोहे फ्री दिए जाएगे। चा[illegible] जनों के साथ चार शेरों का सेट फ्री। अगर आप दस रुबाइया खरीदने का हौसला दिखायें तो चार हिन्दी चौपाइया यू ही घर बैठे लेकर जायेंगे। सोच लीजिए घर बैठे गगा आ गई। अगर अब भी न नहाए तो जीवन भर पछतायेंगे। बच्चे, बूढे, कुवारे, ब्याहे, विधुर, विधवाए सबके लिए यहा मसाला मौजूद है। फिर न कहिएगा कि हमे मालूम न था और हमें किसी ने बताया नहीं। हम तो इस वक्त ढोल पीटकर आपको अफडी के कविता केन्द्र मे बुला रहे हैं। याद रखिए चोरी की रचनाओं पर मुकदमा भी हो सकता है। हम तो आपको सरेआम बेच रहे हैं। साथ मे प्रमाण पत्र भी हमारा इन रचनाओ पर। अब हमारा कोई हक नही है। अब ये आप पर है कि आप क्या करते हैं। हा इतना जरूर याद रखियेगा कि जल्दी करनी है आप आज ही आकर रचनाए खरीद लीजिए। भीड से बचने के लिए कतार बना लीजिए, क्योकि हमारे पास कविताए तो हैं कम और देश मे कवि-लेखक हैं ज्यादा।

शर्म आती है, मगर

मैं पहला आदमी नही जो शर्माने के बारे में कुछ लिख रहा हू। जब बात शरमाने तक आ ही गई है तो मैं क्यो शरमाऊ—जब और लोग बिल्कुल नही शरमाते। शरमाने की धज्जिया आज उधेल कर रख ही दू, ऐसा मेरा इरादा है। बस शरमाना कोई लाभदायक क्रिया नही है। अगर आप खाना खाते वक्त शरमाएगे तो भूखा रहना पडेगा, अगर बस के इन्तजार मे आप खडे खडे शरमाते रहे तो आपका कोई बस नही मिलेगी—बस तो बस, आप को तो बस का टिकट तक नही मिल सकेगा। हा एक बात है अगर कोई युवती खडी-खडी शरमा जाए तो टिकट की तो बात ही क्या, बस तक जाएगी, लोग अपने मेहनत से खरीदे हुए टिकट उनको देकर अपना जीवन सार्थक मानेंगे।

ये तो आपको भी मालूम है कि शरमीला आदमी किस काम का। जरा कल्पना करके देखिए, आखो मे सुरमा लगाये, हाथो मे गजरा पहने, ताली बजाते हुए, मटकता हुआ कोई आपके पास से ये कहता हुआ गुजर जाये "अए-हए बडे अच्छे लग रहे हो।" इसलिए ये तो बगैर किसी हिचकिचाहट के कहा जा सकता है कि शरमाना केवल नारी के चरित्र का महत्त्वपूर्ण गुण है, इसका आभूषण है। अब ये सब कुछ उसकी सूझबूझ और कुशलता पर

निभर करता है कि वो अपनी इस कला का उपयोग किस प्रकार उचित समय पर करती है। महाकवि कालिदास से लेकर आज के कवि वालीदास तक और अन्धकवि सूरदास से लेकर सूझते हुए कवि सूरदास तक नारी के इस शरमाने के गुण पर अपनी जान छिडकते रहे हैं। अगर कोई जरा सी शरमा जाती है तो वेचारे कवि या शायर की तो जान पर आ जाती है। जब कोई मुझे देखकर शरमाती है तो उस समय अपने आपको ससार का सबसे बेहतरीन आदमी मानने लगता हू।

एक बात आपको और बतायें, ये कोई मजाक नही है कि आप ठीक वक्त पर शरमा कर वक्त की नजाकत का फायदा उठा जायें, कई बार ये तीर गलत समय पर भी तरकश से निकल जाता है और उस समय की हालत तो वो ही जानता है जो घटना-स्थल पर उपस्थित हो, क्योकि वो सब तो यथार्थ होता है जिसे भोगना पडता है।

जी हा, जरा-सा मौका चुके नही कि ये वला, जान के लिए वला बन जाती है। इसका भी एक समय होता है, एक अवसर होता है। मिसाल के तौर पर एक शादीशुदा औरत अगर किसी पराए मर्द को देखकर शर्मा जाती है तो जाहिर है कि परिणाम सुखद होने के अवसर कतइ नही हैं। जब कि एक स्टेनो अगर अपने बॉस से डिक्टेशन लेते हुई शरमाती रहे तो उसके प्रमोशन के चान्सेज हैं, फ्यूचर नाईट है। इसलिए शरमा कर शरमाने की कोशिश कीजिए। इतना भी मत शरमाइए कि सामने वाला भी शरमाने लग जाए—और दोनो ही शरमा गए तो फिर शर्म का महत्व जाता रहेगा क्योकि ऐसी हालत मे शम कोमन हो जाएगी और खेल-प्रेमी जानते है कि खेल मे कोमन पाइन्ट की कोई गिनती नही होती। शर्म पर वैसे कई बेशर्मो ने भी भाषण दिए हैं, उपदेश बखाने है जो उनके लिए नही शर्म के लिए एक शर्म की

वात है। आदिकाल से ही शायर, लेखक, कवि शरमाने की बात पर पोथे भरते चले आए हैं। अगर कोई गलती से भी जरा सी शरमा जाती थी तो साहित्यकार को बदहजमी हो जाया करती थी और जब तक वो उस पर कुछ न लिख देता, उसे चैन नहीं मिलता और इसके लिखने के बाद ही समाज के उस वर्ग को भी चैन मिलता जो दुर्भाग्य से उसका पाठक या श्रोता होता है। आजकल ये सब कुछ आउट आफ डेट हो गया है क्योंकि जिनके शरमाने पर साहित्यकार मर जाया करता था, उन्होंने शरमाना ही छोड दिया है अब तो वो भी इसका अर्थ यू लेती है शरमा—ना अर्थात् शरमा मत, शर्म किस बात की और फिर शर्म किससे और क्या। इनका मानना है कि आज तक जितने भी अपराध हुए है उनके पीछे शरमाने की क्रिया का जबर्दस्त हाथ रहा है। इसके पीछे तो तख्त पलट गए हैं, सल्तनतें बदल गई है। नूरजहा जहागीर को देखकर जरा सी शरमाई थी और मुगलकाल के इतिहास का ढाचा ही बदल गया। मगर आजकल शर्म कही नजर नहीं आती पहले तो वो कौडियो के भाव दिखाई देती थी। इसका अर्थ ये नही समझना चाहिए कि अब शर्म का महत्त्व खत्म हो गया या उसके ग्राहक नही रहे। शरमाने पर जान निसार करने वाले लोगो की कमी नही है। अब भी किसी के शरमाने पर मर मिटने को बहुत से लोग तैयार है।

इस पक्ष को सबल बनाने के लिए एक सत्य कथा आपको बताता हू। हुआ ये कि लडका अपनी होने वाली वधू को देखने के लिए गया। लेकिन लडके ने बजाय उस लडकी के उसकी सहेली को सलेक्ट कर लिया क्योंकि वो उससे अधिक शरमा रही थी। अब ये बात अलग है कि आप अपने जीवन मे कितना शरमाते हैं। अगर नारी मे शरमाने की अदा नहीं है तो वो एक वीराना ही महसूस होगी। वैसे भी अगर और शरमाना छोड दें

तो शायरो और कवियो का क्या होगा। इससे तो साहित्य का बहुत बडा नुकसान होगा इसलिए साहित्य के लिए ही सही औरत को कुछ तो शरमाते रहना हो चाहिए।

सफल गृहस्थ जीवन के लिए भी ये आवश्यक है कि पत्नी यदा क्दा शरमाती रहे इससे कुछ देर के लिए ही सही पति अपने आपको प्रेमी तो महसूस करें। आदमी महबूबा को इसलिए पसद करता है कि वो शरमाती है, पत्नी नही शरमाती है—ये वात अलग है कि महबूबा भी बीवी बनने के बाद शरमाना छोड दे। जानें क्या वात है, पुरुप नारी के शरमाने के पीछे दीवाना रहता है और चतुर नारिया इस कला का सदुपयोग कर जीवन मे आनन्द की अनुभूति करती हैं। शरमाने पर और अधिक क्या कहू, आप भी शायद सोच रहे होगे मैं भी कितना वे शर्म हू।

मगर ऐसी बात नही है, शर्म तो मुझे भी आती है मगर सिर्फ बुरे कामो से।

□□